भी अधिक कुशलता, गुणवत्ता व उपादेयतायुक्त पद्धति से पुनर्स्थापित किया जा सकता है। गोधन एव गौ-उत्पादो से जुडी हुई इन प्रकृति पदत्त व्यवस्थाओ मे से एक विधा है - कामधेनु चिकित्सा पद्धति।

आयुर्वेदाचार्य राजवैद्य रेवाशकर जी ने इस विधा मे विशेष उल्लेखनीय कार्य किया है। उन्होने पचगव्य - विशेषकर गोमय एव गोमूत्र से रामबाण ओषधियो का निर्माण और ब्लड केंसर जैसे अनेक असाध्य रोगो का सफल उपचार करके इस वेदोक्त पर्यावरण शुद्धि व स्वस्थ जीवन की परपरा को न केवल पुनर्जीवित ही किया है अपितु पारदर्शी तरीके से इस पुस्तक मे ओषधियो मे प्रयुक्त सामग्री, निर्माण विधि, गुणधर्म, उपयोग आदि का सटीक वर्णन किया है। अनेक स्थानो पर उनके प्रशिक्षण शिविर लगे है। हजारो रोगी इससे निरतर लाभान्वित हो रहे है।

आयोग ने गोरक्षा, गोपालन, गो-सवर्धन, चारागाह विकास, ग्राम स्वावलबन व स्वरोजगार की कार्य-योजनाओ के साथ इस कामधेनु चिकित्सा पद्धति को प्रदेश के सभी अचलो, शहरो, गॉवो के जन-जन तक, क्षेत्रानुसार प्रशिक्षण शिविर लगाकर पहुँचाने का कार्यक्रम बनाया है। यह पुस्तक इस श्रखला की एक कडी है।

गोमूत्र से एक और चमत्कार घटित हुआ है। गोबर से बायो-गेस सयत्र के द्वारा रसोई गेस, बिजली,पॉवर प्राप्त होने की बात हम सभी जानते है, पर बिना बायो-गेस सयत्र के गोबर अथवा गोमूत्र मे सीधा तार डालकर, उन तारो को किसी भी घडी से जोड देने पर घडी अबाध रुप से निरतर चल सकती है, यह बात अब तक अज्ञात थी। बेटरी सेल से चलने वाली घडियॉं आज आयोग के कार्यालय मे बिना सेल के केवल गोबर से तथा गोमूत्र से चल रही है। स्पष्ट है कि गोबर, गोमूत्र मे विद्यमान विद्युत तरगो को यदि हम धनीभूत करके सग्रहित व सचालित करने मे सफल हो गये तो हर घर व झोपडे को हम केवल गोबर गोमूत्र से आलोकित कर सकेगे। यह इस युग की एक क्रातिकारी घटना होगी। हमे इस दिशा मे अभी बहुत काम करना है।

आयोग को कामधेनू चिकित्सा प्रकल्प के लिए बबई के श्री दीपचन्द भाई गार्डी से विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है। हम उनका आभार मानते हैं।

विश्वास है आयोग के गोसेवा प्रकल्पो को गति व शक्ति प्रदान करने के लिए सभी प्रकृति प्रेमियो का तन-मन-धन से सर्वभावेन सहयोग, समर्थन व मार्गदर्शन हमे हमेशा प्राप्त होता रहेगा।

भँवर लाल कोठारी

अध्यक्ष

राजस्थान गो-सेवा आयोग

डी-146, सावित्रीपथ बापूनगर, जयपुर (राज)
फोन · (0141) 517569

गोरक्षा के लिए मार्मिक अपील

सहृदय बधुओ,

आज देश मे रोजाना 50 हजार के लगभग गोवश कत्लखानो की भेट चढ रहा है । मास निर्यात की होड लगी हुई है । अहिसा की भूमि पर हिसा का ताडव हो रहा है । आतक, भ्रष्टाचार और दुराचार सीमाएँ लाघ रहा है। प्रकृति का सतुलन बिगड रहा है । परिस्थितियाँ प्रलयकारी बनती जा रही है।

इस विकट स्थिति मे सभी राष्ट्रभक्तो से हमारी मार्मिक अपील है कि देश को हिसा और दुराचार की विष्फोटक स्थिति मे से निकालने के लिए अहिसा-करुणा-वात्सल्य के प्रतीक कामधेनु रुप गोधन की रक्षा का आज ही सकल्प ले। एक गोवश को बचाने एव सालभर तक उसका पालन-पोषण करने के लिए तीन रुपये प्रतिदिन के हिसाब से 1100/- (ग्यारह सो रुपये) तथा एक से अधिक गोवश की रक्षा हेतु उतनी ही गुणित राशी का सहयोग आयोग को प्रदान करे । आयोग इस वर्ष कम से कम 20 हजार गोवश की रक्षा और व्यवस्था करने के लिए कृत सकल्प है । सहयोग राशी रेखाकित ड्राफ्ट अथवा चेक द्वारा "राजस्थान गो-सेवा आयोग" के नाम से जयपुर भिजवाने का अनुग्रह करे ।

---- निवेदक ----

जयबहादुर सिंह शेखावत
उपाध्यक्ष

भँवरलाल कोठारी
अध्यक्ष

अनुक्रमणिका

क्र सं.	विषय	पृष्ठ संख्या

क्र सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
19	गौमूत्र सेवन से हाई ब्लड प्रेशर और दमा पर चमत्कारी लाभ	46
20	गौमूत्र का पशु रोगो पर सफल परिणाम	48
21.	लेखक के अप्रकाशित ग्रथो की सूची	49
22	गौमूत्र गोबर से बनने वाले कुछ योग (औषधि)	50-64
	1 गौमूत्रासव	50
	2 गौमूत्र अर्क व गोतीर्थ	50
	3 गौमूत्र घनवटी	51
	4 बालपाल रस	51
	5 नारी सजीवनी	52
	6 प्रमेहारी	53
	7 गौमूत्र हरडे चूर्ण	53
	8 गौतक्रासव	54
	9 श्वित्र नाशक योग (खाना)	55
	10 पचगव्य घृत	56
	11 गौमय दन्त मजन	57
	12 गोमय तेल	57
	13 गोमय मरहम	58
	14 कामधेनु तेल	59
	15 श्वित्र नाशक योग (लगाना)	59
	16 गोपाल नस्य	60
	17 गौमय साबुन	60
	18 गोमय अगराग पाउडर	61
	19 विश्व देव धूप बत्ती	62
	20 गोदेव धूप	63
	21 एक्जिमा साबुन	63
	22 कामधेनु खाद (सूखा)	64
	23 कामधेनु खाद (तरल) स्प्रे के लिए	64
	24 कामधेनु शेम्पू	64
	25 गोमूत्र इल्ली नाशक स्प्रे	64

पुस्तक प्रकाशन का उद्देश्य

भारतीय सस्कृति के मूल स्त्रोत वेद ह । जो ब्रह्मा के द्वारा आविर्भाव है । वेद शाश्वत है। आयुर्वेद, उन्ही का आरोग्य विषय का उपाग ह। स्वास्थ का अर्थ शारीरिक, मानसिक, आत्मिक सुख से ही हे ।

गो कामधेनु रुप मे सम्पूर्ण सुख दाता है। ''मातर सर्व भूतानां, गाव सर्व **सुख प्रदा**''। गोवश, गौपालक के घर पैदा होता है । गोपालक आज आर्थिक दृष्टिकोण से गो को महत्व देने लग गया है । चरागाह (गोचर भूमि) का नष्ट कर दिया जाना भी इसका एक कारण रहा है। जो उसे आर्थिक सोच मे लाया हे । गो को बछडा बछडी दूध देने तक वह पालन पोषण करता ही है । अर्थ लाभ लेता है पर यह लाभ उसे प्राप्त नही होने के बाद वह उसे किसी प्रकार से बहुत सस्ते मूल्य मे बेच देता हे । ऐसा गौवश कतलखाने पहुच कर अति क्रूरता से मारा जाता है ।

अतएव कतलखाने मे न पहुच सके तथा ग्राम-ग्राम, घर-घर मे ही वह आजन्म प्रतिष्ठित हो जावे । इस हेतु ''पचगव्य'' मे वर्णित महत्व से गौमूत्र व गौमय के ओषधीय उपयोग की जानकारी सरल रीति से देना ताकि -

1 राष्ट्र गो हत्या के अभिशाप व तज्जन्य प्राकृतिक विपदाओ से बचे ।

2 गौपालक, हत्यारे को गाय बेचने के महापाप से बचे ।

3 गो हत्यारा, इस भीषण कर्म से बचकर अपना मनुष्य जीवन सार्थक बना सके।

4 गौ मास भक्षण कर्त्ता, गो मास भक्षण से होने वाले महारोगो से बचे।

5 वसुन्धरा, गो रक्त की बूँदो से बचकर ''**स्वर्गादपि गरीयसी**'' का गर्व प्राप्त कर सके, देविक सम्पदाओ से पूर्ण हो ।

6 मानव महारोगो से गोमूत्र के ओषधि सेवन से छुटकारा पा सके । सुबद्धि, सुस्वास्थ्य प्राप्त कर सुख-शान्ति पा सके ।

7 गौपालक को घर मे ही गोमूत्र के ओषधि प्रयोग से रोग नाश की सरल

जानकारी हो जाने पर, वह गौमाता का आर्थिक लाभ गौ दूध, बछड़ा देने तक ही न समझकर गौमूत्र (पचगव्य) का औषधि महत्व भी समझेगा तथा अपने घरेलू उपचार करके घर मे ही परिवार, पडोस को रोगो से बचाकर, अपने परिवार के चिकित्सा पर होने वाले भारी खर्च व समय तथा स्वास्थ्य की तथा राष्ट्र के धन की बचत करके स्वदेशी अपनाने मे अग्रसर हो सकेगा ।

यदा कदा अपने इस बूढे गौवश को स्वय नही रख सकेगा तो गौशालो मे देकर गौ हत्यारो के हाथ मे पडने से बचा सकेगा । योग बनाने की विधि का अन्त मे वर्णन कर देने से घर-घर दवा बन सकेगी । जहा गौशालाये इस गौवश से ''पचगव्य'' की महौषधियॉ अपने यहा बनाकर जनता को उत्तम स्वास्थ्य देकर सस्ता मूल्य प्राप्त करके भी गोवश पालन का सम्पूर्ण योगक्षेम प्राप्त कर लेगी । जिनके घरो मे गौमाता है, वे भी योग बनाकर गोमाता बचा सकेगे ।

गौशालाये दान चन्दे पर ही आश्रित न रहेगी । सारा गौवश रुककर कतलखाने मे नहीं जावेगा । सस्थाए आर्थिक रुप से सम्पन्न, व स्वालम्बी हो जावेगी तब ही निम्न नारा सफल व सार्थक हो सकेगा । गोमूत्र से शिविरो मे बनाये जाने वाले योगो की निर्माण विधि भी लिखी है ताकि जिनके घर एक भी गाय हे, वे स्वय बना सके। इस पुस्तक मे वर्णित विषय की जानकारी हेतु लिखे ।

घर–घर गाय, ग्राम–ग्राम गौशाला ।
यही है हमारी – निरोग शाला ।

राजवैद्य रेवा शंकर शर्मा
रटलाई, जिला झालावाड़ (राज)
पिन–326 024
फोन · 84489 (07432)

2 रोग क्यों होते है ?

प्रश्न रोग क्या हे ? प्रकृति की अवज्ञा।

उत्तर अप्राकृतिक आहार-विहार रोग की जननी है। (Disobediency of nature)

रोग क्यो होता है ? त्रिदोषो की विषमता (वात-पित्त-कफ)

चिकित्सा क्या है। त्रिदोषो की समता (समान वात, पित्त कफ) करना।

त्रिदोष नाशक वस्तु का काम ही दोषो की समता करना ह।

गौमूत्र त्रिदोष नाशक है। किन्तु पित्तकृत हे (कुछ मात्रा मे)

''**सर्वे रोगा. हि मन्दाग्नो।**'' सभी रोग मन्दाग्नि से होते हे।

अग्नि और पित्त मे समता है। इसलिए अग्नि तीव्र है तो रोग नहीं होगे। गोमूत्र, अग्नि तेज रखता है। विष रोगो को पैदा करते हे। विषाणु रोगो को पैदा करते हे। गोमूत्र जन्तुघ्र हे। विषम दोष भी रोग कारक है। '' **रोगाहि विषम दोषा।**

''गौमूत्र धातुओ को समान बनाता है। **साम्य दोषारोगता।** विषम-मल-क्रियाए भी रोगकारक होती है । गौमूत्र मल-क्रिया समान करता हे। रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी भी रोगोत्पादन करती है।

गौमूत्र रसायन है। **गव्यं तु सम्प्रोक्तं, जीवनीय रसायनम्।** हमारे शरीर मे कुछ तत्व, जो हमको जीवन देते है व मूत्र के द्वारा बाहर निकलते हे। और शने शने· हम बूढे हो जाते हं जिसे अग्रेजी मे (Old Age) कहते है।

गौमूत्र इन एन्जाइम की पुन पूर्ति करता हे। यह बात इस चिकित्सा से पूर्ण साबित हो गई है।

मूत्रो मे सर्वोत्तम मूत्र गौमूत्र है। और आयुर्वेद मे जहा मूत्र नाम आया हो वहॉ गौमूत्र ही मानना चाहिये। यह बात शास्त्रोक्त सिद्ध हो गई है। गो हमारी माता हे, हम उसके पुत्र है। इसलिए गौमूत्र लाभ करता है, गौवश व मानव मे अत्यधिक सामजस्य हे कहा है - **जा घर तुलसी और गाय-ता घर वैद्य कबहु न जाय।**

मूत्रेषु, गौमूत्र गुणतो ऽ अधिक। अविशेषात् कथने, मूत्र गौमूत्रमुच्यते ।।

गौमूत्र जितना अधिक पुराना होगा, उतना ही गुणकारी होता है, सड़ता नहीं है। क्योकि गौमूत्र मे गंगा ने वास किया है। यह पौराणिक कथा है। जैसे गौमूत्र मे ताम्र ओर स्वर्णक्षार होता है। स्वर्ण रसायन है और स्वर्ण सर्वरोगनाशक शक्ति रखता है। स्वर्ण सभी प्रकार का विषनाशक है। इसलिए दातो मे, कानो मे , नाक मे यहाँ तक कि गुदा प्रक्षालन करने के लिए और अपने बाये हाथ की अगुली मे ही स्वर्ण मुद्रिका पहिनने का विधान था। ताकि आहार, जल वायु सभी स्वर्ण से टकराकर शरीर मे प्रविष्ट हो इसलिए स्वर्ण के पात्र मे भोजन करने का रिवाज था। आज भी ताम्रपात्र मे पानी पीने का प्रावधान है। बगला कहावत है **''जो खाय गौचूर चोना, तार देह होई सोना''।**

रोग मानसिक व शारीरिक होते है। मानसिक रोगो का कारण विषाद होता है। **''विषाद, करोति इति विष.''** विषाद से विष होता है। उसी विषाद के फलस्वरुप वायरस शरीर मे बन जाता है इस वायरस का नाम ही विषाणु है और विषाणुओ के समूह का नाम ही केन्सर है। रक्त मे प्रवेश होने पर रक्त विषाणु(ब्लड केसर) कहलाता हे। केसर की उत्पत्ति 99 प्रतिशत मानसिक विषाद का परिणाम किसी न किसी रुप से होता है। यहाँ तक कि माता के गर्भ मे पल रहे बच्चे पर माँ के मानसिक क्लेश का प्रभाव होता है। उस सतान को कालातर मे ब्लड केसर हो जाता है तथा वायरस वाली बीमारिया होती है।

गौमूत्र क्लेश का नाश करता है। यह शरीर और मन, दोनो को शुद्ध करता है। इसलिए इससे मानसिक क्लेश का प्रभाव नही रहता, यह सतोगुण युक्त सात्विक है। केसर विष के विषाणु से बनता है। यह विषाणु रोग, गौमूत्र के लेते रहने से नष्ट हो जाता है। यदि केसर हो भी गया हो, तो नष्ट हो जाता है। विष को शमन करने मे गौमूत्र पूर्ण सफल हे। आयुर्वेद की बहुत-सी विषैली जडी बूटियाँ व विष के पदार्थ, गौमूत्र से ही शुद्ध किए जाते है। गौमूत्र से मन प्रसन्न एव शरीरस्थ रोग नही होते है। यदि हो भी जावे तो सफलता से ठीक हो जाते है।

3 गौ क्या है ? गौमूत्र क्या है ?

महाराज दिलीप को शान्त स्वर मे नन्दिनी कहती है -

'' न केवलां पयसा प्रसूतिम्-वे हि मां काम दुधां प्रसन्नाम्''

अर्थ मै प्रसन्न होने पर सभी कामनाओ की पूर्ति करने वाली हूँ। मूझे केवल दूध देनेवाली ही न समझे रहना।

गौ मे सब देवताओ का वास है। यह कामधेनु का स्वरुप हे। सभी नक्षत्रो की किरणो का यह रिसीवर है। प्रासकर्ता है। अतएव सबका प्रभाव इसी मे है। जहाँ गौ है वहा सब नक्षत्रो का प्रभाव रहता है। सभी देवताओ की कृपा होती है। गौ ही ऐसा दिव्य प्राणी है, जिसकी रीढ की

हड्डी के अदर सूर्य केतु नाडी होती है। इसलिए दूध, मक्खन, घी स्वर्ण आभा वाला है। क्योकि सूर्य केतु नाडी, सूर्य की किरणो के द्वारा रक्त मे स्वर्ण क्षार वनाती है - वही स्वर्ण क्षार गौ रस मे विद्यमान है।

गौमूत्र क्या है ?

गौ के रक्त मे प्राण शक्ति होती है। गोमूत्र, रक्त का गुर्दो द्वारा छना हुआ भाग है। गुर्दे रक्त को छानते है। जो भी तत्व इसके रक्त मे होते है वही तत्व गौमूत्र मे है।

4 आवश्यक प्रश्नोत्तरी

प्रश्न 1 गौमूत्र किस गाय का लेना चाहिए ?

उत्तर - जो वन मे विचरण करके, व्यायाम करके इच्छानुसार घास का सेवन करे, स्वच्छ पानी पीवे। स्वस्थ हो। उस गो का गौमूत्र ओषधि गुणवाला होता है। शास्त्रीय निर्देश है कि - **''अग्रमग्र चरन्तीनामोषधीनां वने वने''**।

प्रश्न 2 गौमूत्र किस आयु की गौ का लेना चाहिए ?

उत्तर- किसी भी आयु की , बची, जवान, बुढी, गौ का गौमूत्र औषधि प्रयोग मे काम मे लाना चाहिए।

प्रश्न 3 क्या बैल, छोटा बच्चा या वृद्ध बैल का भी गौमूत्र औषधि उपयोग में आता है?

उत्तर - नर जाति का मूत्र अधिक तीक्ष्ण होता है। पर ओषधि उपयोगिता मे कम नहीं है, क्योकि प्रजाति तो एक ही है। बैलो का मूत्र सूघने से ही बध्या (बाझ) को सन्तान प्राप्त होती है। कहा है **''ऋषभांष्चापि, जानामि राजन् पूजितलक्षणान्। येषां मूत्रमुपाघ्राय, अपि बन्ध्या प्रसूयते॥''** (सदर्भ - महाभारत विराटपर्व)

अर्थ उत्तम लक्षण वाले उन बैलो की भी मुझे पहचान है, जिनके मूत्र को सूघ लेने मात्र से बध्या स्त्री गर्भ धारण करने योग्य हो जाती है।

प्रश्न 4 · गौमूत्र को किस पात्र मे रखना चाहिए ?

उत्तर - गौमूत्र को ताम्बे या पीतल के पात्र मे न रखे। मिट्टी, कॉच, चीनी मिट्टी का पात्र हो एव स्टील का पात्र भी उपयोगी है।

प्रश्न 5 कब तक संग्रह किया जा सकता है ?

उत्तर - गोमूत्र, आजीवन, चिर गुणकारी होता है। धूल न गिरे, ठीक तरह से ढंका हुआ हो। गुणो मे कभी खराब नहीं होता है। रग, कुछ लाल, काला, तावा व लोहा के कारण हो जाता है। गोमूत्र मे गगा ने वास किया है। गगाजल भी कभी खराब नही होता है। पवित्र ही रहता है। किसी प्रकार के हानिकारक कीटाणु नही होते है।

प्रश्न 6 ˙जर्सी गाय के वंश का गोमूत्र लिया जाना चाहिए या नही ?

उत्तर- नही लेना चाहिए।

प्रश्न 7 .गौमूत्र की मात्रा प्रति दिन वयस्क की क्या हैं ?

उत्तर - सामान्य मात्रा 25 मि लीटर (एक ऑस या अढाई तोला) एक समय, ऐसे दो बार मे 50 मि लीटर (2 ओस या एक छटाक) प्रतिदिन सुबह शाम मिलाकर। अधिक भी लिया जा सकता हे। केवल मल अधिक निकल कर ऑते शुद्ध हो जाती है। गौमूत्र पूर्णत निर्विष होने से हानिकारण नही है। मात्रा कम ही लेना चाहिए।

प्रश्न 8 .गौमूत्रासव, किस रोग पर नही लेना चाहिए ?

उत्तर - मधुमेह - रक्तशर्करा (Blood Suger & Diabetes) मे मना है। क्योकि इसमे गुड मिलता हे। वेसे अर्क व बटी तो ले सकते हे व सादा गौमूत्र सेवन कर सकते हे।

प्रश्न 9 गर्भवती व वालक की मात्रा क्या है ?

उत्तर - सामान्य मात्रा से आधी मात्रा देना चाहिए।

5 गौमूत्र के नव्य मतानुसार रासायनिक तत्व वर्णन और उनके द्वारा रोगों पर विजय

गौमूत्र के नव्य रसायन शास्त्र मतानुसार तत्वो का रोगो पर लाभ तालिका

क्र स.	रासायनिक तत्वो के नाम	रोगो पर तत्वो के प्रभाव
1	नाइट्रोजन (Nitrogen) नेत्रजन (NH_2)	मूत्रल, वृक्कका प्राकृतिक उत्तेजक रक्त विषमयता को निकालता है।
2	सल्फर (Sulphur) गधक (S)	बड़ी आत की पुर सरण क्रिया को बल मिलता है। रक्त शोधक है।
3	अमोनिया (Ammonia) (NH_3)	यह शरीर धातुओ और रक्त सगठन को स्थिर करता हे।
4	अमोनिया गेस (Ammonia Gas) (NH_2)	यह शरीर धातुओ और रक्त सगठन को स्थिर करता हे।
5	कॉपर (Copper) ताम्र (Cu)	अनुचित मेद (चर्बी) या उभार को बनने से रोकता हे।
6	आयरन (Iron) लोह (Fe)	रक्त मे उचित लाल कणो व निर्माण बनाये रखता हे। कार्य शक्ति स्थिर

		रखता है।
7	यूरिया (Urea) ($CO(NH_2)_2$	मूत्र उत्सर्ग पर प्रभाव करता है। कीटाणु नाशक है
8	यूरिक एसिड (Uric Acid) ($C_5H_4N_4O_3$)	हृदय शौथ नाशक, मूत्रल होने से विषशोधक है।
9	फॉस्फेट (Phosphate) (P)	मूत्रवाही सस्थान से सिकता कण (पथरी कण) निकालने मे सहायक है।
10	सोडियम (Sodium) सोडियम (Na)	रक्त शोधक, अम्लता नाशक है। Anti-acid है।
11	पोटेशियम (Potassium) (K)	कौटोम्बिक सावधि आमवात नाशक क्षुधा कारक है। मासपेशी दौर्बल्य, आलस्य मिटाता है।
12	मैगनीज (Mangnese) (Mn)	कीटाणुनाशक, कीटाणु बनने से रोकना,गैगरीन सडाध से बचाता है।
13	कार्बोलिक एसिड (Corbolic Acid) (HCOOH)	कीटाणु नाशक, कीटाणु बनने से रोकना,गैगरीन सडाध से बचाता है।
14	कैल्शियम (Calcium) खटिक (Ca)	रक्त शोधक अस्थि पोषक, जन्तुघ्न रक्त स्कन्दक है।
15	साल्ट (Salt) लवण (NaCl)	सन्यास विषमयता अम्लरक्तता, नाशक जन्तुघ्न
16	विटामिन ए, बी, सी,डी,ई (Vitamin A,B,C,D,E)	विटामिन बी (Vitamin B) जीवनीय तत्व, उत्साहस्फुर्ती बनाये रखना घबराहट, प्यास से बचाता है। अस्थि पोषक प्रजनन शक्ति दाता है।
17	अन्य मिनरल्स अन्य खनिज (Other Minerals)	रोग विरोधनी शक्ति को बढाता है।
18	लेक्टोज दुग्ध शर्करा (Lactose) ($C_6H_{12}O_6$)	तृप्ती रहती है। मुख, शोष, हृदय को ताकत देता है, स्वस्थ करता है। प्यास, घबराहट को मिटाता है।

19	एन्जाइम्स (Enzyms)	आरोग्यकारक तत्व पाचक रस बनाते, रोग प्रतिरोधनी शक्ति बढाते है।
20	वॉटर (Water) जल (H_2O)	जीवनदाता है, रक्त को तरल बनाए रखता। ताप क्रम को स्थिर रखता है।
21	हिप्युरिक एसिड (Hipuric Acid) (CgNgNox)	मूत्र के द्वारा विषो को बाहर निकालता है।
22	क्रियाटिनिन (Creatinin) ($C_4HgN_2O_2$)	जन्तुघ्न है।
23	आठ मास की गर्भवती गाय के मूत्र मे हार्मोस भी होते है। जो स्वास्थ्य वर्धक है।	
24	स्वर्ण क्षार Aurum Hydra Oxide (AUOH)	जन्तुघ्न, रोग निरोधक शक्ति दाता (Immunity Power) बढाता है। (Hydra-Oxide) (AuOH) Highly Antoboitic विषनाशक, Anti-toxin है।

6 गौमाता – विषनाशनी

जा घर, तुलसी अरु गाय। ता घर, वैद्य कबहु न जाय॥

कहा है **जीवन्तु अवध्न्या ता मे विषस्य दूषणी.**

अर्थ अवध्य गौवे जीवित रहे, वे विष दूर करती है। आयुर्वेद मे विषैले पदार्थो को गोमूत्र से ही शुद्ध किया जाता है।

''गौमूत्रे, त्रिदिनं, स्थाप्यय विषं तेन विशुध्यति''।

यह गौमाता के विषय मे एक विशेषता है।

गाय के खाने मे कभी विषैला या हानिकारक तत्व आ जाता है तो वह उसको उसके मॉस मे सोख लेती है, तथा मूत्र, गोबर एव दूध मे उत्सर्जित नही करती है अथवा अति अल्प मात्रा मे छोड़ती है। ऐसा अन्य पशुओ को पदार्थ देकर दूध व मूत्र परीक्षा करके जॉच मे पाया गया है। इसीलिए गौमूत्र, पवित्र व गोमय, मल शोधक है। गौ दूध तो विषनाशक है ही गौमूत्र, का ''पचगव्य'' मे समावेश हुआ है। पचगव्य को समस्त रोग नाशक कहा है।

''यत्वगस्थि, गत, पापं देहे, तिष्ठति, मामके।
प्राशनात, पंचगव्यस्य, दहस्यग्निरिवेन्धनम्'' ॥

अर्थ त्वचा से अस्थि तक, जो भी पाप (रोग) मेरे शरीर मे हो, वे ऐसे नष्ट हो जाते है जैसे अग्नि से ईधन।

गौमूत्र का आयर्वेद रीति से वर्णन, औषधि एवं उपयोगिता

आयुर्वेद, वेदो से लिया, चिकित्सा का अग है। वेद, ब्रह्मा के मुख से कहे गए है। **ब्रह्म वाक्य जनार्दनम् है।** इसलिए आप्तोपदेश कहा है। गोमूत्र प्रभाव से भी निरोग करता है। **''अचिन्त्य शक्ति''** इति प्रभाव कहा है। जिस शक्ति को चिन्तन (वर्णन) नही किया जा सकता है, उसे प्रभाव कहते हे। गोमूत्र का आयुर्वेद मे गुण बताए है।

आयुर्वेद के अनुसार वर्णन –

रस कटु, तिक्त, कषाय, मधुर, लवण है। पचरस युक्त हे।

गुण पवित्र, विषनाशक, जीवणुनाशक, त्रिदोषनाशक, तान्त्रिक, मेधाशक्तिवर्धक। अकेला ही पीने से सभी रोग नाशक हे। पूरे गुण आगे वर्णित है।

वीर्य उष्ण वीर्य है। विपाक कटु है।

प्रभाव तान्त्रिक, सर्वरोग नाशक है। यह कायिक, मानसिक रोगो को नाश करता है। यह योगियो का दिव्य पान है। जिससे वे दिव्य शक्ति पाते थे। गौमूत्र मे गगा ने वास किया है। सर्वपाप (रोग) नाशक है। अमेरिका मे भी अनुसधान से सिद्ध हो गया है, कि विटामिन ''बी'' तो गो के पेट मे सदा ही रहता हे।

यह सतोगुण वाला हे। विचारो मे सात्विकता लाता है। 6 मास लगातार पीने से आदमी की प्रकृति सतोगुणी हो जाती है। रजोगुण, तमोगुण का नाशक है। शरीरगत विष भी पूर्ण रुप से मूत्र, पसीना, मलाश के द्वारा बाहर निकालता हे। मनोरोग नाशक है। आयुर्वेद मे कहा है -

गव्यं पवित्रं च रसायनम् च पथ्य च हृद्यं बल बुद्धि स्यात।
आयु प्रद, रक्त विकार हारि, त्रिदोष, हृद्रोग, विषापहं स्यात।

अर्थ गोमूत्र (पचगव्य) परम रसायन, पथ्य हे, हृदय को आनन्द देने वाला, बल बुद्धि प्रदान करने वाला हें। यह आयु प्रदान करने वाला, रक्त के समस्त विकारो को दूर करने वाला, कफ वात तथा पित्त जन्य तीनो दोषो, हृदय रोगो व विष के प्रभाव को दूर करने वाला है।

7 गौमूत्र के गुण आयुर्वेद ग्रंथानुसार

सुश्रुत सहिता सूत्र स्थान के 45 मे अध्याय मे गोमूत्र के पूरे गुण लिखे गये है। सुश्रुत सहिता 5000 वर्ष पुराना आयुर्वेद का ग्रथ है। आयुर्वेद वेदो से लिया गया है। चरक सहिता, राजनिघट्ट, वृद्धवागभट्ट, अमृतसागर मे वर्णन आया है। 'अष्टाग सग्रह' के अनुसार -

'' गव्यं सुमधुरं किन्चिद् दोषघ्नं कृमी कुष्ठनुत्
कण्डुन्घ्न, शमयेत, पीतं सम्यक् दोषो वहे हितम्।''

(चरक सु अ 1 श्लोक 100)

सुश्रुत सहिता मे निम्न रुप से फिर वर्णन है कि **तीक्ष्णान्युश्णानि, कटुनी, तिक्तानी, लवणानुरसानी, लघुनि, शोधनानि, कफवातघ्न, कृमि, मेदो, विष, गुल्मार्श, उदर, कुष्ठ, शोफारोचक, पाण्डुरोग, हृद्यांनी दिपनानिच सामान्य ।(सूत्र अ 45 श्लोक 217)**

सुश्रुत सू अ 45 श्लोक 217 कापुन इसी आर्ष ग्रथ मे वर्णन है। **गौमूत्र कटु तीक्ष्णोष्ण सक्षारस्नान वातलम् लघ्वाग्नि, दिपनं, मध्यं, पित्तल, कफवात नुत्, शुलं, गुल्मोदरानाहविरेकास्थापनादिषु, मूत्र प्रयोग साध्येषु गव्य, मूत्र प्रयोजयेत सु अ 220-221**

गौमूत्र कडवा, चरका, कषैला तीक्ष्ण, उष्ण, शीघ्र पाचक, मस्तिष्क के लिए शक्तिवर्धक, कफ वात हरने वाला शूल (Colic) गुल्म, उदर, अनाह, कुण्डु (Itching Pain) खुजली, मुखरोग नाशक है। यह किलास (Lucoderma) कुष्ट, आम, बस्तिरोग नाशक है। नेत्र रोग नाशक है। अतिसार (Amebiasis) वायु के द्वारा सब विकार, कास, शोथ, उदररोग, कीटाणु-नाशक पाण्डु, तिल्ली, कर्णरोग, श्वास, मलावरोध, कामला, बिल्कुल ठीक होते है।

चिकित्सा मे गौमूत्र का ही प्रयोग करना चाहिए। सभी मूत्रो मे गौमूत्र मे गुण अधिक है। अत गौमूत्र का ही प्रयोग करना चाहिये। भाव प्रकाश सग्रह ग्रथ मे भाव मिश्र ने निम्नलिखित गुण लिखे हे।

भाव प्रकाश आयुर्वेद का अति प्रचलित ग्रथ है। इसमे गौमूत्र के गुणो का वर्णन इस तरह हे-

गौमूत्रं, कटु, तीक्षोष्ण, क्षार तिक्त कषायकम् ।
लघ्वाग्नि दीपन, पित्त कृत्कफ वात नुत ।।

शुल, गुल्म, उदर, आनाह, कण्डु अक्षि मुखरोगजित् ।
किलासगद्वातम् वस्ति कुष्ठ नाशकम् ।।

कास, स्वासापहम् शोथ, कामला पाण्डु रोगहरत् ।
कण्डु विलास गद्, शूलं, मुख अक्षिरोगान् ।।

गुल्म, अतिसार, मरुदामय, मुखरोधान् ।
कास, सकुष्ठ जठर, कृमि, पाण्डुरोगान ।।

गोमूत्र एकं पिवेत पाक, करोति ।
सर्वेष्वपि च मुत्रेषुगोमूत्रं गुणोतोऽधिकम ।।

अतो अविशेषात्कथने, मूत्रं गोमूत्र उच्यते ।
प्लीहा, उदर, श्वास कास, शोथ, वर्चो ग्रहापहम् ।।
शूल, गुल्मअर्श आनाह, कामला, पाण्डु रोग जित् ।।
कषाय, तिक्त, तीक्ष्ण, पूरणात्कर्ण शूलहृत् ।।
अध्याय 19 श्लोक 1 से 6 मावप्रकाश पूर्वखड नि घ

अर्थ · गोमूत्र, चरका, तेज, गरम, क्षार, कडुवा, कषैला, लवण अनुरस, लघु अग्नि दीपन, मस्तिष्क के ज्ञान तन्तुओ को बढाने वाला, वात कफ नाशक पित्त करनेवाला है। पेट मे दर्द, वायुगोला, पेट के अन्य रोग, खुजली, नेत्र रोग, मुख के सभी रोगो को नष्ट करता है। (श्वित्र) (सफेद दाग) (लिकोडरमा), रक्त विकार, सभी कुष्ट ठीक हो जाते हैं। कास, श्वास शोथ, पीलिया (कामला) रक्त की कमी, दस्त लगना (अतिसार) वायु के सभी रोग, सभी कीटाणु नष्ट करता है। गोमूत्र एक (अकेला) ही पीने से विकार नष्ट कर देता है। सभी प्रकार के मूत्रो से गुण अधिक है। लीवर, तिल्ली, उदर रोग, सूजन, दस्त साफ न आना, बवासीर, कर्ण मे डालने से कान के रोग नष्ट होते हे।

आम वृद्धि, मूत्र रोग, स्नायु, विकार, अस्सी प्रकार के वात रोग नष्ट होते है।

साराश हे कि सम्पूर्ण रोगो पर एक अकेला गोमूत्र ही पूर्ण सक्षम है।

8 रोग क्यों होते हैं ? विश्वमान्य सिद्धान्त

अन्य ग्रथो मे वर्णन निम्न है .

आर्यभिषक अथवा '' **हिन्दूस्तान का वैद्यराज** '' नाम का गुर्ज़र भाषा मे लिखा गया ग्रथ, एक अच्छा सग्रह हे। अब तक इसके 15 सस्करण प्रगट हो चुके हे और करीब 50 हजार पुस्तक खरीदी गयी है। इस ग्रथ मे गोमूत्र के विषय मे वर्णन इस प्रकार किया गया है -

गोमूत्र तूरा, कडुवा, तीखा, नमकीन, उष्ण-गरम, तीक्ष्ण, पाचक, अग्निदीपक, मल का

भेदन करने वाला, पित्तवर्धक, थोडा मधुर, मलो का सरण कराने वाला, लेखन (चिपके हुए मल रुप दोषो को उखाड़ कर बाहर निकालने वाला) कफ, वायु, कुष्ठ रोग, गुल्म, उदररोग, पाण्डु, श्वित्र (सफेद कोढ), शूल, अर्श, कण्डु खुजली, दमा, आम, भ्रम, ज्वर, आनाह, खाँसी, कब्ज, सूजन, नेत्र रोग, मुखरोग, त्वचा रोग, प्रदरादि स्त्रीरोग, अतिसार तथा मूत्रावरोध (मूत्र का रुक जाना) इन सबका शमन करता है।

आचार्य श्री बापालालभाई वैद्य भारत के विख्यात वनस्पतिशास्त्री थे। उन्होने अपने 'द्रव्यगुणशास्त्र' मे गौमूत्र के बारे मे लिखा है कि यह थोड़ा मधुर, दोषघ्न, कृमिघ्न और कण्डुहर है। उदर रोग मे उत्तम है। मूत्र प्रयोग मे साध्य विकारो मे गौमूत्र लेना चाहिए।

फारसी ग्रथ, ''अजायबुल्मखलुकात'' मे अनेक असाध्य रोगो की गौमूत्र चिकित्सा का वर्णन है।

गौमूत्र रोगों पर किस प्रकार से सफल होता है ?

यह वर्णन करने से पहले यह जान लेना आवश्यक है कि रोग क्यो होते है। जिससे उसको समझना आसान हो सकेगा।

प्रश्न : रोग क्यो होते हैं ?

उत्तर : निम्न कारण है .-

1 विभिन्न जीवाणुओं के किसी प्रकार से शरीर मे विभिन्न अगो पर आक्रमण करने के कारण।
2 शरीर की रोग विरोधिनी शक्ति की कमी के कारण।
3. दोषो (त्रिदोष) के विषम हो जाने के कारण।
4 आरोग्य दायक तत्वो (जींस) की किसी प्रकार की कमी के कारण।
5 कुछ खनिज तत्वो की कमी के कारण।
6. मानसिक विषाद के कारण।
7. किसी भी औषधि के अति प्रयोग के कारण।
8 विद्युत तरगो की कमी के कारण।
9 वृद्धापकाल मे उपरोक्त किन्ही कारणो के कारण।
10 आहार मे पौष्टिक तत्वो की कमी के कारण।
11 आत्मा की आवाज के विरुद्ध काम करने के कारण।
12 पूर्वजन्मो के पापो के कारण। (जिन्हे कर्मज व्याधियाँ कहते है)
13 भूतो के शरीर मे प्रवेश से भूताभिष्यग रोग हो जाते है।
14 माता पिता के वश परम्परा के रोग होते है।
15 विषो के द्वारा रोग होते है।

गौमूत्र रोगों पर कैसे विजयी होता है ?

1 गौमूत्र मे किसी भी प्रकार के कीटाणु नष्ट करने की चमत्कारी शक्ति हे सभी कीटाणुजन्य व्याधिया नष्ट होती है।

2 गौमूत्र दौषो (त्रिदोष) को समान बनाता है। अतएव रोग नष्ट हो जाते हे।

3 गौमूत्र शरीर मे लिवर (यकृत) को सही कर स्वच्छ खून बनाकर किसी भी रोग का विरोध करने की शक्ति प्रदान करता है।

4 गौमूत्र मे सभी तत्व ऐसे है, जो हमारे शरीर के आरोग्यदायक तत्वो की कमी की पूर्ति करते है।

5 गौमूत्र मे कई खनिज खासकर ताम्र होता है, जिसकी पूर्ति से शरीर के खनिज तत्व पूर्ण हो जाते है। स्वर्ण क्षार भी होने से रोगो से बचने की शक्ति देता है।

6 मानसिक क्षोभ से स्नायु तत्र (नर्वस सिस्टम) को आघात होता है। गौमूत्र को मेघ्य और हृद्य कहा है। यानी मस्तिष्क एव हृदय को शक्ति प्रदान करता है। अतएव मानसिक कारणो से होनेवाले आघात से हृदय की रक्षा करता है और इन अगो को होनेवाले रोगो से बचाता है।

7 किसी भी प्रकार की औषधियो की मात्रा का अतिप्रयोग हो जाने से जो तत्व शरीर मे रहकर किसी प्रकार से उपद्रव पैदा करते है उनको गौमूत्र अपनी विषनाशक शक्ति से नष्टकर रोगी को निरोग करता हे।

8 विद्युत तरगे हमारे शरीर को स्वस्थ रखती है। ये वातावरण मे विद्यमान है। सूक्ष्मातिसूक्ष्म रुप से तरगे हमारे शरीर मे गोमूत्र से प्राप्त ताम्र के रहने से ताम्र के अपने विद्युतीय आकर्षक गुण के कारण शरीर से आकर्षित होती रहकर स्वास्थ्य प्रदान करती है।

9 गौमूत्र रसायन है। यह बुढापा रोकता है। व्याधियो को नष्ट करता है।

10 आहार मे जो पोषक तत्व कम प्राप्त होते है उनकी पूर्ति गौमूत्र मे विद्यमान तत्वो से होकर स्वास्थ्य लाभ होता है।

11 आत्मा के विरुद्ध कर्म करने से हृदय और मस्तिष्क सकुचित होता है, जिससे शरीर मे क्रिया कलापो पर प्रभाव पडकर रोग हो जाते है। गौमूत्र सात्विक बुद्धि प्रदान कर, सही कार्य कराकर इस तरह के रोगो से बचाता है।

12 शास्त्रो मे पूर्व कर्मज व्याधिया भी कही है जो हमे भुगतनी पड़ती हे। गौमूत्र मे गगा ने निवास किया हे। गगा पाप नाशिनी हे अतएव गोमूत्र पान से पूर्व जन्म के पाप क्षय होकर इस प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हे।

13 भूतो के शरीर प्रवेश के कारण होने वाले रोगो पर गोमूत्र इसलिए प्रभाव करता है कि भूतो के अधिपति भगवान शकर है। शकर के शीश पर गगा है। गौमूत्र मे गगा है अतएव गौमूत्र पान से भूतगण अपने अधिपति के मस्तक पर गगा के दर्शन कर, शान्त हो जाते है। और इस शरीर को नहीं सताते है। इस तरह भूताभिष्यगता रोग नही होता है।

14 जिन रोगियों की ऐसी स्थिति हो, रोग के पहले ही गोमूत्र कुछ समय पान करने से रोगी के शरीर मे, इतनी विरोधी शक्ति हो जाती है कि रोग नष्ट हो जाते है।

15 विषो के द्वारा रोग होने के कारणो पर गौमूत्र विष नाशक होने के चमत्कार के कारण ही रोग नाश करता है। बडी-बडी विषैली औषधियॉ गौमूत्र से शुद्ध होती है। गौमूत्र, मानव शरीर की रोग प्रतिराधनी शक्ति को बढाकर, रोगो को नाश करने की क्षमता देता है। Immunity Power देता है। निर्विष होते हुए विषनाशक है। Anti-Toxin है।

10 गौमूत्र से नष्ट होने वाले रोग

1 अग्निमाध्य Dyspepsia (भूख की कमी)
2 अजीर्ण Indigestion
3 अतिसार (दस्त) Diarrhoea
4 अन्त्रवृद्धि Hernia
5 अम्लपित्त (एसीडीटी) Acidity
6 अन्त्र वृद्धि शोथ (एपेटीसायटीस)
7 अतस्त्राव ग्रथिविकृति Disorder of Ductlessglands
8 अन्त्रपुच्छ प्रदाह Appendicitis
9 अपस्मार (मिर्गी) Epilipsy
10 भ्रम (चक्कर आना) Vertigo
11 आरोचक Anorexia
12 अर्बुद Tumour
13 अर्श (बवासीर) Piles
14 अष्ठीला Prostate
15 अश्मरी Calculus
16 अस्थिभग Bone Fracture
17 प्रमेह Diabetes
18 अहिफेन विष Opium Poison
19 आध्मान (आफरा) Flatuence
20 आनाह (बद्धकोष्ठता) Constipation
21 आमवात Rhematism
22 आमशय व्रण Peptic - Ulcer
23 उदर रोग Disorder of Stomach
24 उदावर्त (गैस) Gasses
25 लू लगना Sun Stroke
26 प्रमेह पीड़िका Carbunce
27 प्रवाहिका Dysentry
28 पाण्डू Anemia
29 पामा (खुजली) Eczyma
30 पित्त वृद्धि
31 प्लीहा वृद्धि Enlargement of Spleen
32 बद्ध कोष्ठ Constipation
33 बहुमूत्र Poly-Urea

34 मदात्यय Alchohalism
35 मसुरिका (रोमान्तिका) Measules
36 मुखरोग Mouth Diseases
37 मूर्छा Unconsiousness
38 मूत्रकृच्छ - मूत्राघात Dysurea
39 मूत्रवाहिनीमेव्रण Ureterulcer
40 मेदो वृद्धि Obesity
41 यकृत वृद्धि Liver
42 रक्त दबाव
HBP High Blood Pressure
43 रक्त पित्त Haemorrhea
44 रक्तविकार Blood Impurity
45 उन्माद Insanity
46 उपदश (गर्मी) Syphlis
47 उरतोय Plurisy
48 उरस्तम्भ
49 कण्ठरोग Scroffula
50 कब्ज Constipation
51 कुष्ठरोग Leprosy
52 कर्णरोग Ear Diseases
53 कृमि Worms
54 कामला Jaundice
55 कफ Cough
56 गुल्म Colic
57 दाह Int Heat
58 वमन करना
59 विरेचन देना
60. यालरोग Infentile Diseases
61 बुद्धिमान्घ्य (स्मृति नाश) Loss of Memory
62 भगन्दर Fistula
63 भस्मक
64 दंतरोग Dental Diseases
65 दाद Ring Worm
66 धातुक्षीण्ता Sex Debityly
67 निद्रानाश Insomania
68 नासारोग Nosal Diseases
69 नेत्ररोग Eye Diseases
70 पलित (बाल सफेद होना)
71 प्रतिशाय (जुकाम) Coriza
72 रक्तस्त्राव Haemorrage
73 वमन Vomiting
74 वातरोग Vaat Roga
75 वातरक्त Gout
76 विचर्चिका Eczyma
77 विद्रधि Absces
78 विष विकार Toxicity
79 विसूचिका (हैजा) Cholera
80 विसर्प (विस्फोट)
81 ज्वर Fever
82 वृक्क विकार Kidney Disease
83 ज्वारातिसार
84 तृषा Thirst
85 त्वचारोग Skin - Disease
86 विविध व्रण Wounds
87 शिर शूल Headache
88 शोथ (सूजन) Odema
89 श्लीपद (हाथी पॉव) Filaria
90 श्वास (दमा) Asthama

91. सन्नीपात
92 सगृहणि Spraue
93 सेद्रिय विष वृद्धि
94 सुजाक Gınorrhea
95 स्नायुविकृति Nervous Debility
96 स्त्रीरोग Female Dısease
97 स्नायुक (नारु) Gınea Worm
98 स्तन रोग
99 हलीमक
100 हारीद्रक
101 हिक्का Hıceogh
102 हिस्टीरिया Hysteria
103 हृदय रोग

11 गौमूत्र की कल्पनाएँ

प्रश्न : गौमूत्र की और कल्पनाए भी है या नही ?

उत्तर : गौमूत्र की तीन कल्पनाए है ।

1– गौमूत्रासव – गौमूत्र 10 किलो, पुराना गुड़ 2 किलो को गलाकर बर्तन मिट्टी का अथवा कॉच का पात्र भी हो सकता है । गौमूत्र को पहले उबाल लेवे । ताकि इसकी आमोनिया गैस निकल जाये । इससे गध नष्ट हो जायेगी । फिर छानकर ही गुड़ को गलाकर पुन गरम करे । एक बार पुन गुड़ सहित उसको छाने। यह सधान लगभग 15 दिन तक रहना चाहिए। फिर बिना हिलाए ऊपर से पात्र मे से यह आसव निथार लेना चाहिए। ताकि इसका गाढा भाग यूरिया तलछट नीचे रहे जाये और गौमूत्र आसव पारदर्शक पतला बने । मात्रा 25 मिली लीटर भोजन के बाद दो बार पीना चाहिए । गुण सभी गौमूत्र के समान है । इस क्रिया को, इसके गुणो को स्थाई करने के लक्ष्य से की गई है । लाभ शीघ्र होता है ।

गौमूत्र आसव का उपयोग पूरी तरह से गोमूत्र के अनुसार ही करना चाहिए मात्रा गौमूत्र से कम हो गई है । चिरस्थायी रहता हे । पुराना होने पर अधिक से अधिक गुणकारी होता है । अतएव आसव की क्रिया वाला गौमूत्र ज्यादा गुणकारी और पूर्ण गुणयुक्त होता है ।

2– गौमूत्र अर्क – गौमूत्र को एक नलिका यत्र से अर्क निकालना है । इस यत्र के द्वारा गौमूत्र को एक मिट्टी के बर्तन मे या लोहे के पात्र मे भरकर अग्नि पर चढाते है । फिर इस यत्र मे एक नलिका के द्वारा जो भाप निकलती है उसको एक पात्र मे जमा करते है । जिसके नीचे ठडा पानी रखा जाता है, वहाँ वह भाप पानी बन जाता है । उस ठडे पानी के बर्तन को सदैव सभालते रहना चाहिए, ताकि उसका पानी गरम न बन जाए । पानी को ठडा करके उलटते रहना चाहिए । इस यत्र मे जो नलिका लगायी जाये, वह सफेद रग की प्लास्टिक की हो तो उत्तम ताकि उसका भाप दिखता रहे । यदि धुऑ जाता दिखे, तो तुरन्त ऑच कम करनी चाहिए । इस अर्क का गुण गौमूत्रासव के सपूर्ण गुणो के बराबर तो नही है क्योकि क्षार पेदे मे रह जाता है और बहुत से तत्व

अग्नि के सपर्क मे उड़ जाते हे। तथापि स्वच्छ निर्गध के कारण यह ज्यादा लोकप्रिय है। लाभ कुछ दिन अधिक लेते रहने से होता है। महिलाए ओर बचो को आसानी से दे सकते हे। इसे देने मे शहद मिलाया जाए तो लाभ बढ जाता है। भोजन के वाद 12 मिली लीटर थोड़ा शहद मिलाकर पीना चाहिए।

मुख्य रुप से इसका प्रयोग खून मे बढे हुए कोलेस्ट्रोल को कम करने और वजन घटाने के उपयोग मे आता है। बच्चो की खासी, सभी प्रकार के रोगो मे आसानी से दिया जा सकता है। सुकुमार महिलाओ के लिए अधिक अनुकूल है। यह घर के कुकर की सीटी वाला ऊपर का भाग निकाल कर उसकी जगह प्लास्टिक या रबर की नलकी लगाकर भी बनाया जा सकता है। चाय की केटली के ऊपरी ढक्कन को मिट्टी और कपडे से बन्द कर केटली की टोटी के मुह पर रबर या प्लास्टीक की नलकी लगाकर भी बनाया जाता है। घर पर थोड़ा सा गोमूत्र से भी काम चल सकता है।

3–गौमूत्र घनवटी– गौमूत्र को कढाई मे रखकर ओटावे। अत मे उसका गाढा भाग रह जावे, जैसा कि गन्ने के रस को औटाकर गुड़ बनाया जाता है। गाढा रह जाने पर उतार कर नीचे रखर ठडा कर लेना चाहिए। एक किलो गौमूत्र से 50 ग्राम घन प्राप्त होता है। इसे खुरचकर आपस मे कूटकर गोलियॉ चने के प्रमाण की बनानी चाहिए। ये गोलिया चिपचिपी न हो इसलिए गाय के गोबर के उत्तम कण्डो को जलाकर राख बनानी चाहिए। फिर उस बारीक कपड़े से छानकर रखनी चाहिए। इस राख का कुछ रग पलटने के लिए शुद्ध गेरु 1/100 भाग पीसकर मिलानी चाहिए। ताकि कुछ रग सुधर जाए। फिर बारीक कपड़े से छानना चाहिए। इस गोलियो को इस छने हुए राख पावडर मे ही रखना चाहिए। यह राख का पावडर इन गोलियो का ॲवझॉरव्हट (शोषक) है जिससे मौसम की नर्मी या गर्मी दोनो का प्रभाव नही होता। फिर प्लास्टिक की शीशी मे बद रखना चाहिये। जितनी मात्रा पैक करनी हो, उतनी ही शीशी मे सुरक्षित रखे। जब गोलियॉ खाली हो जावे तो इस पावडर को फेक दे। नमी से बचाने का उपाय करना है। धूप मे यह पिघलजाती है। इसके लिए गर्मी से बचाना आवश्यक है। गोबर की राख ही मे रखना ठीक है। दूसरा उपाय यह हे कि सूखे हुए घन सत्व को पीसकर चौथाई भाग छोटी हरडे का चूर्ण मिलाकर गोली बनावे।

चिकित्सा मे ''मूत्राष्टक'' का उपयोग गौमूत्र है। सभी प्रकार के मूत्रो मे गौमूत्र ही सर्वोत्तम है। जहॉ भी मूत्र का निर्देश हो, वहा गौमूत्र मानना सही है। पीछे के श्लोक मे वर्णन कर दिया है कि सर्वोत्तम, निर्विघ्न, सरल, सफल, सात्विक, निरपद, औषधि गौमूत्र ही है। परहेज का विशेष ध्यान रखे। इसके लिए कामधेनु पथ्यापथ्य पुस्तक भी देखना चाहिए।

नोट गौमूत्र का कोई भी योग लेने से यदि दो – तीन बार दस्त लगें तो यह मानना चाहिए कि बडी आत मे जो मल संग्रह था, वह निकल रहा है। फिर भी एक–दो दिन बाद भी यह दशा रहे तो जो भी कल्पना गौमूत्र की ले रहे है, आसव, अर्क, वटी कुछ भी हो, मात्रा आधी, कुछ दिनो के लिए देनी चाहिए। बाद मे पूर्ण मात्रा कर सकते है।

12 तीनों कल्पनाओं में मात्रा अथवा सेवन के गुणों का अन्तर

प्रश्न 1- इन तीनो कल्पना वटी, आसव ओर अर्क मे किसी के बजाय किसी को भी उपयोग मे लेने मे क्या गुणो का अन्तर है या नही। स्पष्ट करे।

उत्तर - सबसे ज्यादा लाभ तो गोमूत्र का अपने असली रुप मे उपयोग करने से ही हे। सिर्फ सुविधा से यह कल्पनाएँ बनाई है। पर गुणो मे ज्यादा फर्क नही मानकर ही सोचना चाहिए। अधिक दिन ले लेने से पूर्ण लाभ हो जाता हे। ये व्यवहारिक रुप से ले सकने की विधि हैं। गौमूत्र की किसी भी कल्पना को किसी भी प्रकार की, एक दूसरे के बजाय ले लेना चाहिए। गुणो मे कोई अन्तर नही है। वटी के बजाय, आसव, आसव के बजाय अर्क ले सकते हे। सिर्फ मुधमेह (रक्तशर्करा) उष्णवात मे गौमूत्रासव प्रयोग मे नही लाना है। क्योकि गुड़, इन रोगो मे हानि करता है।

प्रश्न 2- गौमूत्र की इन तीन कल्पनाओ के प्रयोग मे मात्रा का आपस मे क्या फर्क है ? जबकि एक के बजाय दूसरी प्रयोग मे ली जावे।

उत्तर निम्न अनुपात है।

1- गौमूत्र दस मिली लीटर, बराबर एक वटी (600 एम जी)
2- गौमूत्र दस मिली लीटर बराबर है, दस मिलीलीटर आसव (गौमूत्र का)
3- गौमूत्र दस मिली लीटर बराबर हे, पाच मिली लीटर अर्क (गौमूत्र का) के। उसे पानी मिलाकर या मधु के साथ लेना चाहिए।

प्रश्न 3- इन तीनो कल्पनाओ मे परहेज का कोई अन्तर है क्या ?

उत्तर - परहेज तो रोगी की आदत व रोग पर ही होता है। दवाई की इन कल्पनाओ मे किसी प्रकार का परहेज नही है। अतएव इन तीनो मे से कोई भी औषधि का रुप लेने पर परहेज का कोई अन्तर नही है।

प्रश्न 4- गौमूत्र, गौमूत्र आसव, गौमूत्र अर्क, गौमूत्र घन वटी व गौमूत्र अकेला की प्रयोग, मात्रा रोग, उन पर परहेज का वर्णन कीजिए।

उत्तर - गौमूत्र, गौमूत्र धनवटी, गौमूत्र अर्क, गोमूत्र आसव का परहेज सहित वर्णन निम्न रुप से सविस्तार रोगानुसार हे।

13 गर्भवती महिलायें और बच्चों की मात्रा

गौमूत्र घन वटी का रोगानुसार प्रयोग, मात्रा परहेज आदि की पूर्ण मात्रा 15 वर्ष से ऊपर समझनी चाहिए।

इससे कम आयु को आधी मात्रा देना है। गर्भवती स्त्री को आधी मात्रा देनी चाहिए। किसी भी ऋतु मे इसकी कोई मनाई नही है।

एक गोली दस मिली मीटर गौमूत्र से प्राप्त सत्व से बनती है। परहेज किसी प्रकार का नहीं है। बीमारी के अनुसार कुछ वस्तुऍं न खाये। अधिक मात्रा से भी कोई हानि नहीं है। प्रत्येक प्रकार की व्याधि के लिए उसके परहेज की जानकारी आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार बहुत आवश्यक इसलिए बीमारी का परहेज पूरी तरह से रोगी को समझाना चिकित्सा हे। इसके सेवन से कोई साइड एफेक्टस् नहीं होते। दूसरी दवा सेवन करने के साइड एफेक्ट्स हुए हो तो भी यह ठीक हो जाते हैं।

रोग नाश के लिए परहेज (अपथ्य) का महत्व

आयर्वेद ने कहा है ·

पथ्ये सति गदार्तस्य किम् औषध निषेवनम्।
पथ्येऽसति गदार्तस्य किमौषध निषेवनम्॥

अर्थ रोगी अगर परहेज से ही रहे तो दवा की आवश्यकता क्या है ? अगर परहेज ही नहीं रखता है तो दवा देने का क्या लाभ होगा।

गोली कभी नमी की हवा से चिपक जाये, तो खराब हुआ न माने। अगर कोई दवा पहले से चल रही हो तो उसे भी थोड़े दिन जरुर लेवे। फिर अपनी पुरानी दवा स्थायी असर करने पर धीरे-धीरे छोड़ दे।

15 गौमूत्र, आसव, अर्क, वटी, गौमूत्र की रोगानुसार मात्रा, अनुपान, समय, परहेज की तालिका

इस तालिका मे वटी की मात्रा का ही वर्णन हो पाया है। इनके बजाय अगर दूसरी कल्पानाए भी ली जावे तो गुणो मे कोई अन्तर नहीं है। परहेज तो रोग पर वही रहेगे। समय, अनुपान भी वही रहेगा। जब वटी के बजाय आसव, गौमूत्र (अकेला ही) या गौमूत्र अर्क मे से किसी एक को लेवे तो इसका अनुपात ऐसे समझ कर किसी भी कल्पना को ले सकते है। मधुमेह, रक्तशर्करा (Blood Sugar) सुजाक मे गौमूत्रासव नही देना चाहिए। दो वटी के बजाय अकेला गौमूत्र 20 मि ली । दो गोली के बजाय गौमूत्र आसव 20 मि ली । दो गोली के बजाय गौमूत्र अर्क 10 मि ली लेना है।

नोट समय, अनुपान, परहेज सब वही रहेगे जो वटी के सामने लिखे है।

क्र सं S No	नाम रोग Disease	मात्रा Qnty	समय Time	अनुपान Followed by	परहेज (कुपथ्य) निषेध (मना) है। Diet Avoided
1	अग्निमाध्य (भूख की कमी) (Dyspepsia)	दो गोली	प्रात., सोते समय	पानी से	मावा की मिठाईयॉ, मीठे पदार्थ, दही, चावल, केला।
2	अजीर्ण (Indigestion)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	मावा मिठाईयॉ, तेल के तले पदार्थ और भोजन सभी प्रकार का (तेज भूख लगने तक)।
3	अतिसार (दस्त (Diarrhoea)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	तेल की तली चीजे, भारी भोजन, लाल मिर्च, मसालेदार पदार्थ
4	अन्त्रवृद्धि (Hernia)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	दूध, चावल, दाले (सभी प्रकार की), आलू, केला, दही, तेल की तली चीजे
5	अम्लपित्त (Acidity)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	दूध, चाय, सभी खट्टे पदार्थ, आलू, चावल, केला, दही, तेल की तली चीजे

क स S No	नाम रोग Disease	मात्रा Qnty	समय Time	अनुपान Followed by	परहेज (कुपथ्य) निषेध (मना) है। Diet Avoided
6	आन्त्र वृद्धि शोथ (एपेडीसायटीस)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	सभी दाले, दूध, दही, आलू, चावल,केला, तेल की तली चीजे
7	अतस्राव ग्रथिविकृति (Disorder of Ductlessglands)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	दही, आलू, चावल, केला, मावे की मिठाईयॉ
8	अन्त्रपुच्छ प्रदाह (Apendicitis)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	आलू, चावल, दही, केला, दाले, दूध, बेसन, मावे की मिठाईयॉ
9	अपस्मार (मिर्गी) (Epilpsy)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	दूध, दही, आलू, चावल, केला, मावे के मिष्ठान, मास तेल की तली चीजे
10	भ्रम (चक्कर आना) (Vertigo)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	आलू, चावल, तेल की तले पदार्थ, पचने मे भारी अन्न
11	आरोचक (भोजन मे रुचि न होना) (Anorexia)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	सभी प्रकार के मीठे पदार्थ ओर दूध
12	अर्बुद विष - अर्बुद (Cancer)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	सभी प्रकार के मीठे पदार्थ, खट्टे पदार्थ, आलू चावल, गरिष्ठ अन्न।
13	अर्श (बवासीर) (Piles)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	कब्ज कारक पदार्थ, आलू, चावल, तेल के तले पदार्थ, लाल मिर्च, बेगन, दूध (ज्यादा मात्रा मे), दही

क्र स S No	नाम रोग Disease	मात्रा Qnty	समय Time	अनुपान Followed by	परहेज (कुपथ्य) निषेध (मना) है। Diet Avoided
					मैथून,पीठ की सवारी, ज्यादा बैठक करना।
14	अष्ठीला (Prostate Enlargement)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	मीठे पदार्थ, गरिष्ठ पदार्थ, कब्ज कारक पदार्थ, दूध, दही, आलू, केला, चावल
15	अश्मरी (Calculus	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	आलू, चांवल, दही, केला, गरिष्ठ पदार्थ, नमक, लाल मिर्च, सभी प्रकार की दाले, तेल की तली चीजे, मैथुन, मद्य, मास, अण्डे।
16	अस्थिभग (Bone Fracture)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	सब पकार की खटाई, गरिष्ठ भोजन।
17	प्रमेह (सभी मूत्र रोग) (Urinary Diseases)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	मीठी चाय, रात्रि को भोजन करना, शक्कर, गरिष्ठ भोजन, तेल व घी की तली चीजे, मीठे पदार्थ, चावल, केला, दही।
18	अहिफेन विष (Opium Poison)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	गरिष्ठ पदार्थ।
19	आध्मान (अफारा) (Flatuence)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	समस्त अन्न, दही चावल।

क्र सं S No	नाम रोग Disease	मात्रा Qnty	समय Time	अनुपान Followed by	परहेज (कुपथ्य) निषेध (मना) है। Diet Avoided
20	आनाह (कब्ज) (Constipation)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	चावल, आलू, केला , दही।
21	आमवात (सधिवात) (Rhematism) Joint Pain	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	मक्का, दूध, खटाई (सभी) दाले, घी, नमक, आलू, चावल, केला बर्फ डला पानी।
22	आमाशय व्रण (Peptic-Ulcer)	दो गोली	प्रात·, सोते समय	पानी से	चाय, लाल मिर्च, तेल, मद्य, आलू, चावल, सामान्य दूध, दही, केला।
23	उदर रोग (Disorder of Stomach)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	तेल की चीजे, गरिष्ठ पदार्थ, अधिक चाय, आलू।
24	उदावर्त (गेस) (Gases)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	चाय, तेल की तली चीजे, दूध, गरिष्ठ पदार्थ, आलू, मद्य, मैथुन, बीडी, सिगरेट, भूखे रहना / दालो के बने पदार्थ।
25	प्रभापात (लू लगना) (Sun Stoke)	दो गोली	प्रातः, सोते समय	पानी से	गरम पानी, बर्फ का पानी, मिर्च मसाले वाले भोजन।
26	प्रमेह (पीडिका) (Carbuncle)	दो गोली	प्रातः, सोते समय	पानी से	शक्कर, सब प्रकार की मिठाईयो, मीठे पदार्थ, गरिष्ठ पदार्थ, दिन मे सोना, मैथुन।
27	प्रवाहिका (Dysentry)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	मीठे पदार्थ, लाल मिर्च, मसालेदार पदार्थ, दूध, तेल की तली चीजे।

क्र सं S No	नाम रोग Disease	मात्रा Qnty	समय Time	अनुपान Followed by	परहेज (कुपथ्य) निषेध (मना) है। Diet Avoided
28	पाण्डु	दो गोली	प्रात., सोते समय	पानी से	घी व तेल की अधिक मात्रा, उड़द की दाले, दही, आलू, बर्फ, लाल मिर्च, गरम भोजन, गरिष्ठ भोजन, शराब, धूम्रपान, मैथुन।
29	पामा (एक्जिमा, खुजली) (Eczyma)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	दूध, दही, छाछ, मावा की मिठाईया, मीठे पदार्थ, हरी सब्जियाँ।
30	पित्त वृद्धि	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	लाल मिर्च, मसाले, तेल की तली चीजे, दूध मना है।
31	प्लीहा वृद्धि (Enlargement of Spleen)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	तेज मसाले, दही, आलू, कब्ज कारक पदार्थ,भोजन मे आचार, गरिष्ठ पदार्थ, मैथुन, तेज धूप या अग्नि के सामने रहना मना है।
32	बद्ध कोष्ठ (Constipation)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	आलू, चावल, दही, केला, मावा की मिठाईयाँ, मना है। बेसन की चीजे, तेल की तली चीजे। चाय, मद्य, सिगरेट, बीडी।
33	बहुमूत्र (Poly Urea)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	अधिक खटाई, नये चावल, ज्यादा मीठे पदार्थ खाना अजीर्ण मे भोजन नही करे। घी
34	मदात्यय (शराब की आदत) (Alchohalism)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	कोई परहेज नही / शराब पीकर तुरन्त स्नान न करे।

क्र स S No	नाम रोग Disease	मात्रा Qnty	समय Time	अनुपान Followed by	परहेज (कुपथ्य) निषेध (मना) है। Diet Avoided
35	मसुरीका (Measules)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	तेल-गुड़ खटाई, लाल मिर्च।
36	मुखरोग (Mouth Diseases)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	मीठे पदार्थ, दूध (फीका) घी, खट्टा पदार्थ, आलू, तम्बाकू, जर्दा, चूना, शराब, मद्य।
37	मूर्च्छा (Un-Conciousness)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	मद्य, मैथुन, मास व्यवसन, जर्दा, तम्बाकू, सिगरेट।
38	मूत्रकृच्छ - मूत्राघात (Dysurea)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	दही, आलू, सब प्रकार का व्यसन।
39	मूत्रनलिका मे व्रण (Ureter - Ulcer)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	मीठे पदार्थ, गरिछ भोजन, दिन मे सोना।
40	मेदो वृद्धि (Obesity)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	मीठे पदार्थ, गरिछ भोजन, दिन मे सोना।
41	यकृत वृद्धि (Liver Enlargement)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	आलू, चावल, दही, तेल या घी तली चीजे, मैथुन, सभी दाले, गरिछ पदार्थ।
42	रक्त दबाव (Blood Pressure)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	आलू, चावल, दही, केला, तेल के तले दुष्पाच्य पदार्थ, मद्य, मास, धूम्रपान, मैथुन, लंघन, तीक्ष्ण व्रत, उपवास, रात्रि मे भोजन

क्र स S No	नाम रोग Disease	मात्रा Qnty	समय Time	अनुपान Followed by	परहेज (कुपथ्य) निषेध (मना) है। Diet Avoided
43	रक्त पित्त (Haemorrhea)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	लाल मिर्च, तेल के तले पदार्थ, तीक्ष्ण अचार, मसाले युक्त भोजन, गरिष्ठ पदार्थ, कब्जकारक पदार्थ, आलू, चावल, दही, केला, मद्य, मास।
44	रक्तविकार (Blood Impurity)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	दूध से बने पदार्थ (दही, छाछ, मावा) हरी सब्जियॉ, मास, मीठा पदार्थ, अधिक नमक। दूध मना है।
45	उन्माद (Insanity)	दो गोली	प्रात., सोते समय	पानी से	भैस का दूध, उससे बने पदार्थ, मास, मद्य, गरिष्ठ भोजन, आलू, तेल के तले पदार्थ।
46	उपदश (गर्मी)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	दूध से बने पदार्थ, मास, मद्य, तेल मसाले, स्त्री सहवास, धुमपान, नमक, हरी सब्जियॉ, मीठे खट्टे पदार्थ।
47	उरुस्तोय (Plurisy)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	ठडी हवा, जल के पास रोगी निवास, चावल, घृत, तेल, दही, धूम्रपान, मद्यपान, मासादि भोजन, दही, ठडेफल।
48	उरुस्तम्भ	दो गोली	प्रात., सोते समय	पानी से	वमन, विरेचन, बस्ति, तेल मर्दन, स्निग्ध पदार्थ, खटाई, दाले।
49	कण्ड माला (Scroffula)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	सभी प्रकार का मीठा, खट्टा पदार्थ, दूध, गुड, शक्कर, छाछ, दही, नीबू।

क्र स S No	नाम रोग Disease	मात्रा Qnty	समय Time	अनुपान Followed by	परहेज (कुपथ्य) निषेध (मना) है। Diet Avoided
50	कब्ज (Constipation)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	आलू, चावल, दही, केला, मावा की मिठाईयॉ, धूम्रपान, एक जगह बैठे रहना।
51	कुष्ठ रोग (Leprosy)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	मास, दूध से बने पदार्थ, हरी सब्जिया, मद्य, नमक।
52	कर्णरोग (Ear Diseases)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	ठडा (बर्फ डालकर) पानी, केला, दही,आलू, चावल, कब्जकारक पदार्थ, दाले।
53	कृमि (Worm)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	मीठी वस्तुये, खट्टी वस्तुये, हरी सब्जियां, फीका दूध भी मना है।
54	कामला (Jaundice)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	अधिक मात्रा मे घी, तेल, घूप (सूर्य की तेजी), लहसुन, अचार, मसाले, लाल मिर्च, तेल की तली चीजे, दही, मद्य, मास, मैथुन, अदरक।
55	कास (Cough)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	चादल, दही, केला, ठंडा पानी, दूध, घी (ज्यादा माना मे) तेल की तली चीजे, चावल, आलू।
56	गुल्म (Colic)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	दाले, मक्का, ज्पार, चावल, आलू , दूध, दही, तेल के पदार्थ, भूखे रहना।

क्र सं S No	नाम रोग Disease	मात्रा Qnty	समय Time	अनुपान Followed by	परहेज (कुपथ्य) निषेध (मना) है। Diet Avoided
57	बाल रोग (Infantile Diseases)	दो गोली	प्रातः, सोते समय	पानी से	ज्यादा मीठे पदार्थ, गोली, चॉकलेट, बिस्कुट, टॉफी, कुल्फी।
58	बुद्धिमान्ध्य (स्मृति नाश) (Loss of Memory)	दो गोली	प्रातः, सोते समय	पानी से	आलू, भैंस का दूध, उससे बने पदार्थ, सभी मास, मद्य।
59	भगन्दर (Fistula)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	दूध, दूध से बने पदार्थ, मीठे, खट्टे, आलू, चावल, मास, मिर्च, मसाले, हरी सब्जिया।
60	भस्मक	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	भूखे न रहे, अदरक, मसाले वाले पदार्थ।
61	दतरोग (Dental Diseases)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	मीठी-खट्टी चीजे तथा कब्जकारक पदार्थ, बर्फ का पानी, मास-मद्य, ज्यादा गरम भोजन या चाय पान, चूने का ज्यादा पान मे प्रयोग।
62	दाद (Ring Worm)	दो गोली	प्रातः, सोते समय	पानी से	मास-मद्य, दूध, दूध से बने पदार्थ (दही, छाछ) मावे की मिठाईया, हरी सब्जिया
63	दाह (Interior Heat)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	लाल मिर्च, चाय, तेल की चीजे, भूखे रहना मना है। मद्य, ज्यादा मैथुन।
64	धातुक्षीणता (Sex Debility)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	लघन, ज्यादा मीठे पदार्थ, केला, चावल, दही, बर्फ का सेवन।

क्र स S No	नाम रोग Disease	मात्रा Qnty	समय Time	अनुपान Followed by	परहेज (कुपथ्य) निषेध (मना) है। Diet Avoided
65	निद्रानाश (Insomania)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	लघन मना है, ज्यादा भोजन करके सोना, आलू गरिष्ठ पदार्थ।
66	नासा रोग (Nosal Diseases)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	मीठे - खट्टे पदार्थ मना है, कब्ज कारक पदार्थ मना है। मास, आलू, दही, दूध, दूध से बने पदार्थ।
67	नेत्ररोग (Eye Diseases)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	सिर पर अधिक गरम पानी डालना, अति मन्द प्रकाश मे पढना, वहुत तीव्र प्रकाश मे पढना। अधिक तम्बाकू सेवन, अधिक स्त्री सहवास।
68	पलित (बाल सफेद होना)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	तेज से तेज पदार्थ, कब्ज कारक पदार्थ, आइसकीम, मास, मद्य, मीठे पदार्थ ज्यादा सेवन करना।
69	प्रतिशाय (जुकाम)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	दूध, दही, केला, आलू, चावल, कब्जकारक पदार्थ, आइसक्रीम, मास, मद्य, मीठे पदार्थ ज्यादा सेवन करना
70	रक्तस्त्राव (Haemorrage)	दो गोली	प्रात., सोते समय	पानी से	तेल की तली चीजे, मिर्च मसाले, गर्मी मे रहना, लघन करना।
71	वमन (कै) (Vomiting)	दो गोली	प्रात., सोते समय	पानी से	सभी प्रकार के अन्न वद करने है।
72	वमन करना	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	सभी प्रकार के अन्न मना है।

क्र सं S No	नाम रोग Disease	मात्रा Qnty	समय Time	अनुपान Followed by	परहेज (कुपथ्य) निषेध (मना) है। Diet Avoided
73	वात रोग (Vaat Roga)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	खट्टे पदार्थ, चावल, आलू, खट्टे पदार्थ, मक्का, रात्रि जागरण,ठडा पानी, ठडी हवा, मद्य, लघन, मैथुन, रुखे पदार्थ।
74	वातरक्त (Gout)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	ठडे पदार्थ, चावल, आलू, खट्टे पदार्थ, मक्का, बर्फ का पानी, रात्रि जागरण, लघन, अति मैथुन, मद्य।
75	विचर्चिका (Eczyma)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	मद्य, मास, दूध, दूध से बने पदार्थ, हरी सब्जी, शक्कर।
76	विद्रधि (Absces)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	दूध, हरी सब्जी, नमक, तेल की तली चीजे, मास मना है।
77	विरेचन देना	दो गोली	प्रातः, सोते समय	पानी से	तेल, गुड़-खटाई, गरिष्ट भोजन।
78	विष विकार, रक्त विषाणु	दो गोली	प्रात., सोते समय	पानी से	मद्य, मास, सभी प्रकार के मसाले, सभी अन्न निषेध है।
79	विसूचिका (हेजा) (Cholera)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	भोजन सब प्रकार का मना हे।
80	विसर्प (विस्फोट)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	नमक, तेल, गुड-खटाई, लाल मिर्च, राई आदि मना है।
81	वृक्क विकार (Kidney-Diseases)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	नमक, खटाई, आलू, चावल, दही, केला, उडद की दाल,मास मद्य।

क्र स S No	नाम रोग Disease	मात्रा Qnty	समय Time	अनुपान Followed by	परहेज (कुपथ्य) निषेध (मना) हे। Diet Avoided
82	सभी ज्वर (Fever)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	स्नान, मालिश, अन्न, मेथुन, बर्फ का पानी, दिन मे सोना।
83	ज्वरातिसार (Fever + Dyrrhea)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	अनाज (अन्न) सेवन न करे। स्नान मना हे।
84	तृषा (Thirst)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	आलू, बेसन, गरम मिर्च मसाले।
85	त्वचा रोग (Skin Diseases)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	दूध व दूध से बने पदार्थ, नमक।
86	विविध व्रण (Wounds)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	नमक, दूध, दूध के वने पदार्थ।
87	शिर. शूल (Headache)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	रात्रि जागरण, आतप सेवन, मद्य, मास, लघन, अति मेथुन, क्रोध, अतिउष्ण, अतिशीतल पदार्थ का सेवन।
88	शोथ (सूजन) (Odema)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	नमक, खटाई, स्टार्च वाले पदार्थ (आलू-चावल, दही, केला)
89	श्लीपद (हाथी पॉव) (Filaria)	दो गोली	प्रात., सोते समय	पानी से	दही, आलू, चावल, केला, मावे की मिठाईयो।

क्र सं S No	नाम रोग Disease	मात्रा Qnty	समय Time	अनुपान Followed by	परहेज (कुपथ्य) निषेध (मना) है। Diet Avoided
90	श्वास (दमा) (Asthama)	दो गोली	प्रात·, सोते समय	पानी से	दूध, दूध से बने पदार्थ, दही, कच्ची छाछ, घी व तेल की अधिक मात्रा, उड़द की दाल, दिन में सोना, मैथुन, गुड़ व शक्कर वाले पदार्थ, मद्य, मांस, क्रोध, तेज हवा के झोको को सहन करना।
91	सन्निपात (Managitis)	दो गोली	प्रात, सोते समय	पानी से	दूध, अन्न, निषेध है।
92	सगृहणी	दो गोली	प्रात, सोते समय	पानी से	सभी अन्न निषेध है।
93	सेद्रिय विष वृद्धि गर-विष (Self-Poison)	दो गोली	प्रात, सोते समय	पानी से	सभी अन्न, मद्य, मास मना है। गोदूध, गौतक, गोदधि, मधु देना है।
94	उन्माद (विष जन्य) (Insanity)	दो गोली	प्रात·, सोते समय	पानी से	भैस का दूध, उससे बने पदार्थ, मास, मद्य, गरिष्ठ पदार्थ, आलू, तेल के तले पदार्थ।
95	सुजाक (Ginorrhea)	दो गोली	प्रात, सोते समय	पानी से	दूध, तेल, खटाई, लाल मिर्च मना है। मद्य, मास मना है।
96	स्नायु विकृति (Nervous Debility)	दो गोली	प्रात, सोते समय	पानी से	शराब, मास, बर्फ का पानी, चावल केला।

क स S No	नाम रोग Disease	मात्रा Qnty	समय Time	अनुपान Followed by	परहेज (कुपथ्य) निषेध (मना) है। Diet Avoided
97	स्त्री रोग (Female Diseases)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	लाल मिर्च, अचार, गुड़, गरिष्ठ पदार्थ मना है।
98	स्नायुक्त (नारु) (Ginea Worm)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	दूध, दूध से बने पदार्थ, मास, तेल के तले पदार्थ।
99	स्तन रोग	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	दूध, हरी सब्जी, तेल की तली चीजे, खटाई।
100	हलीमक	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	सभी मसाले, तेल की तली चीजे, खटाई।
101	हारीद्रक	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	सभी मसाले, मद्य, मास, तेल की तली चीजे।
102	हिक्का (Hicough)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	दूध, दही, छाछ, ठडा पानी।
103	हिस्टीरिया (Hysteria)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	तेज मसाले, आलू, चावल, मास, मद्य।
104	हृद्रोग (Heart Diseases)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	गरिष्ठ पदार्थ, बर्फ, अधिक मीठे पदार्थ, तेल के तले पदार्थ, ज्यादा घी, आलू, चावल, केला, दही, मैथुन, रात्रि जागरण, लघन, चिन्ता, क्रोध, मानसिक तनाव।
105	क्षय (राजयक्ष्मा) (Tuber-Closis)	दो गोली	प्रात, सोते समय	पानी से	मीठे पदार्थ, मैथुन, मास, मद्य, तेज मसाले, ज्यादा तेल के तले पदार्थ, वजन उठाना।
106	क्षुद्र रोग	दो गोली	प्रात., सोते समय	पानी से	दूध, दूध से बने पदार्थ।

क्र स S No	नाम रोग Disease	मात्रा Qnty	समय Time	अनुपान Followed by	परहेज (कुपथ्य) निषेध (मना) है। Diet Avoided
107	शुक्राणु अल्पता (Sportzoma)	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	खटाई, ज्यादा स्त्री सग, मद्य।
108	मधुमेह (Diabitis)	दो गोली	प्रात , सोत समय	पानी से	मीठे पदार्थ (शक्कर, गुड़, अगूर, गन्ना, मिठाईयॉ) चावल, आलू, केला, दही, गरिष्ठ अन्न, मैथुन, दिन मे सोना, परिश्रम न करना, रात्रि भोजन, मद्य, मास, तेज मसाले, चिन्ता, क्रोध, लोभ, मोह, भावनाओ मे बहना, मनोह, मानसिक तनाव को त्यागना चाहिये। गोदूध, गौघृत अधिक लाभकारी हे।
109	अनिद्रा	दो गोली	प्रात , सोते समय	पानी से	गरिष्ट भोजन, वातकारक आहार

शराब (मद्य), मांस (सभी प्रकार का) सभी रोगों में मना है, यह मानव का आहार ही नहीं है।

"मेरे विचार के अनुसार गोरक्षा का सवाल स्वराज्य के प्रश्न से छोटा नही, कई बातो में - मैं इस स्वराज के सवाल से भी बड़ा मानता हूँ।

- महात्मा गांधी

गौमूत्र का सामान्य रोगों पर घरेलू प्रयोग

गाय के मूत्र मे कार्बोलिक एसिड होता है, जो कीटाणुनाशक है। अत शुद्धि और स्वच्छता बढाता है। प्राचीन ग्रथो ने इस दृष्टि से ही गौमूत्र को पवित्र कहा है। आधुनिक दृष्टि से गौमूत्र मे नाइट्रोजन, फॉस्फेट, यूरिया, यूरिक एसिड, पोटेशियम और सोडियम होता है। जिन महीनों मे गाय दूध देती है, उस वक्त गौमूत्र मे लेक्टोज रहता है, जो हृदय और मस्तिष्क के विकारो मे बहुत हितकारी है। स्वर्णक्षार भी मौजूद है, जो रसायन है।

गौमूत्र सेवन के लिए जो गाय रखी जाती है वह निरोगी और युवान होनी चाहिए। जगल क्षैत्र और चट्टाने जहा गायों को प्राकृतिक वनस्पति खाद्य रुप मे मिल सके वहा गायो का मूत्र अधिक अच्छा है। गौमूत्र को स्वच्छ वस्त्र से छानकर सुबह मे खाली पेट पीना चाहिए।गौमूत्र पान के एक घटे तक कुछ खाना नहीं चाहिए। स्तन पान करने वाले बच्चो को गोमूत्र देते समय माता को भी गौमूत्र देना चाहिए। मासिक धर्म के दौरान स्त्रियो को गौमूत्र पान से शान्ति और शक्ति मिलती है। सामान्यत युवा व्यक्ति एक छटाक से एक पाव मात्रा मे गौमूत्र सेवन कर सकते है।

गौमूत्र का उपयोग विभिन्न रोगो मे कैसे हो सकता है वह हम क्रमश दे रहे है।

1 कब्ज के रोगी को उदरशुद्धि के लिए गौमूत्र को अधिक बार कपडे से छानकर पीना चाहिए।

2 गौमूत्र मे हरडे चूर्ण भिगोकर धीमी आच से गरम करना चाहिए। जलीय भाग जल जाने पर इसका चूर्ण उपयोग मे लिया जाता है। गौमूत्र का सीधा सेवन जो नहीं कर सकता है उसे इस हरडे का सेवन करने से गौमूत्र का लाभ मिल सकता है।

3 जीर्णज्वर, पाण्डु, सूजन आदि मे किराततिक्त (चिरायता) के पानी मे गौमूत्र मिलाकर, सात दिन तक सुबह और शाम पीना चाहिए।

4 खासी, दमा, जुकाम आदि विकारो मे गौमूत्र सीधा ही प्रयोग मे लाने से तुरत ही कफ निकलकर विकार शमन होता है।

5 पाण्डुरोग मे हर रोज सुबह खाली पेट ताजा और स्वच्छ गौमूत्र कपडे से छानकर नियमित पीने से 1 माह मे अवश्य लाभ होता है।

7 बच्चो को खोखली खासी होने पर गौमूत्र को छानकर उसमे हल्दी का चूर्ण मिलाकर पिलाना चाहिए।

8 उदर के किसी भी रोग मे गौमूत्र पान से लाभ होता है।

9 जलोदर मे रोगी केवल गौदूध सेवन करे और साथ साथ गौमूत्र मे शहद मिलाकर नियमित पीना चाहिए।

10 चरक के मतानुसार लोह के बारीक चूर्ण को गौमूत्र मे भिगोकर इसको दूध के साथ सेवन

करने से पाण्डुरोग मे जल्दी लाभ होता है। सेवन से पहले खूब छानना जरुरी है।

11 शरीर की सूजन मे केवल दूध पीकर साथ मे गौमूत्र का सेवन करना चाहिए।

12 गौमूत्र मे नमक और शक्कर समान भाग मे मिलाकर सेवन करने से उदर रोग शमन होता है।

13 गौमूत्र मे सैधव नमक ओर राई का चूर्ण मिलाकर पीने से उदररोग मिटता है।

14 आंखो की जलन, कब्ज, शरीर मे सुस्ती और अरुचि मे गौमूत्र मे शक्कर मिलाकर लेना चाहिए।

15 खाज, फुन्सिया, विचर्चिका मे गोमूत्र मे आबाहल्दी चूर्ण मिलाकर पीना चाहिए।

16 प्रसूति के बाद सुवा रोग मे स्त्री को गौमूत्र पिलाने से अच्छा लाभ होता है।

17 चर्म रोगो मे हरताल, बाकुची तथा मालकागनी को गोमूत्र मे मिलाकर सोगठी बनाकर इसे दूषित त्वचा पर लगाना चाहिए।

18 सफेद कुष्ठ मे बावची के बीज को गोमूत्र मे अच्छी तरह पीसकर लेप करना चाहिए।

19 कान मे वेदना आदि विकारो मे गौमूत्र को गर्म करके इसकी बूँद डालनी चाहिए।

20 शरीर मे खुजली होने पर गौमूत्र का मालिश और स्नान करना चाहिए।

21 कृष्णजीरक को गौमूत्र मे पीसकर इस का शरीर पर मालिश ओर गौमूत्र स्नान करने से चर्म रोग मिटते है।

22 ईट को खूब तपाकर गौमूत्र मे इसे बुझाकर, कपड़े मे लपेटकर यकृत और प्लीहा (तिल्ली) की सूजन पर सेक करने से लाभ होता है। बगला कहावत है -

लीवराय, पीडाय किम्, दुख पावे, मतिहीन वैद्य।
गौमूत्रेण, सेक, दव, सुख पावे सद्य॥

23 कृमि रोग मे डीकामाली का चूर्ण गौमूत्र के साथ देना चाहिए।

24 सुवर्ण, लोह वत्सनाभ, कुचला आदि का शोधन करने के लिए और भस्म बनाने के लिए औषधनिर्माण मे गौमूत्र का उपयोग होता है। वह विषैले द्रव्यो का विषप्रभाव नष्ट करता है शिलाजीत की शुद्धि भी गौमूत्र से होती है।

25 चर्मरोगो मे उपयोगी महामरिच्यादि तेल और पचगव्य घृत बनाने मे गौमूत्र उपयोग मे लाया जाता है।

26 हाथी पाव (फाइलेरिया) रोग मे गौमूत्र सुबह मे खाली पेट लेने से मिट जाता है।

27 गौमूत्र का क्षार उदर वेदना मे, मूत्ररोध मे तथा वायु का अनुलोमन करने के लिए दिया जाता है।

28 गौमूत्र सिर मे अच्छी तरह मलकर लगाकर थोडी देर तक रखना चाहिए। सूखने के बाद धोने से बाल सुन्दर होते है।

29 कामला रोग मे गौमूत्र अतीव उपयोगी है।

30 गौमूत्र मे पुराना गुड़ और हल्दी चूर्ण मिलाकर पीने से दाद, कुष्ठरोग और हाथी पाव मे लाभ होता है।

31 गोमूत्र के साथ ऐरड तेल एक मास तक पीने से सधिवात और अन्य वातविकार नष्ट होते है।

32 बच्चो को उदर वेदना तथा पेट फूलने पर एक चम्मच गौमूत्र मे थोड़ा नमक मिलाकर पिलाना चाहिए।

33 बचो को सूखा रोग होने पर एक मास तक, सुवह और शाम गोमूत्र मे केशर मिलाकर पिलाना चाहिए।

34 शरीर मे खाज-खुजली हो तो गौमूत्र मे नीम के पत्ते पीसकर लगाना चाहिए।

35 गौमूत्र के नियमित सेवन से शरीर मे स्फूर्ति रहती है, भूख बढती हे और रक्त का दबाव स्वाभाविक होने लगता है।

36 क्षय रोगी को गोबर और गौमूत्र की गध से क्षय के जतु का नाश होने से अच्छा लाभ होता है। अत इसे गौशाला मे रखे और इसकी खाट को गौमूत्र से बार-बार धोना चाहिए।

37 Ring-Worm दाद पर, धतूरे के पत्ते, गौमूत्र मे पीसकर, गौमूत्र मे ही उबाले। गाढा होने पर लगावे।

38 टाइफायड या किसी भी दवाई खाने से सर या किसी स्थान के बाल उड जाते है तो गौमूत्र मे तम्बाकू को खूब पीसकर डाल देवे। 10 दिन बाद पेस्ट टाइप बन जाने पर अच्छा रगड कर बाल झडे स्थान पर लगाने से बाल फिर आ जाते है। सर मे भी लगा सकते है।

17 विशेष परिशिष्ट

आगे के पृष्ठो मे वर्णित गौमूत्र वटी का मानव शरीर पर प्रयोग औषधि के रुप मे सेवन करने पर किसी प्रकार की हानि नहीं होती है। यह निरापद औषधि ही नही, किन्तु घरेलू प्रयोग है। फिर भी इन गोलियो का कलकत्ता की आधुनिक औषधि निर्माता **एलबर्ट डेविड लिमिटेड की टेस्ट** लेबोरेटरी मे जाच कराई जाकर रिपोर्ट सलग्न की जा रही है। यह वटी किसी भी प्रकार के हानिकारक कीटाणुओ रहित है।

महाराष्ट्र राज्य के शासकीय आयुर्वेदिक सचालक महोदय, वरली मुम्बई-18, के दो पत्र भी पुस्तक मे लगा दिए है। जिनमे गोमूत्र घनवटी, गौमूत्र आसव,गौमूत्र अर्क का आतुरालय मे प्रयोग सफलता से रोगियो पर करके सतोष व्यक्त किया गया है।

पशु रोगो पर भी गोमूत्र उनके रोग नाशक सिद्ध हुआ है।

पाठको की पूरी जानकारी के लिए उक्त पत्र प्रकाशित कर दिये हैं ताकि शका का स्थान न रहे।

ब्लड प्रेशर तथा दमा के रोगियो पर गोमूत्र की सफलता का पत्र ''कल्याण'' मे प्रकाशित हुआ था, वह भी लगा दिया है। अवलोकन करे। कैसर रोग पर गौमूत्र से लाभ का अश भी जोडा है।

हिन्दी भाषानुवाद

केविल - ''रेमिट''
फोन - 27 - 2900
3901, 3102
टेलेक्स - 021 - 4085
फैक्स - 91(33) 270714

एलबर्ट डेविड लिमिटेड

रजि ऑफिस-15, चितरजन एवेन्यू,
कलकत्ता - 700072
सदर्भ - के पी एम /के पीं 302
दिनाक 9 नवबर 1994

आदरणीय श्री बाबू

आपके पत्र 13-95-1560 दिनाक 5 अक्टूबर 1995 के सदर्भ मे जिसके साथ एक पेकट गौमूत्र से बनी (डायबिटीज की चिकित्सा के लिए) गोलियो का था।

कृपया हमारे मापदण्ड निर्धारण विभाग के सलग्न पत्र को जिसमे इन गोलियो को जाच के बाद किसी भी हानिकारक जीवाणु से रहित पाया गया है। इसी आधार पर यह गोलिया प्रयोग करने मे सुरक्षित है।

ग्रहण करे सम्मान सहित।

आपका ही विश्वसनीय
(हस्ताक्षर)
के पी मूदडा

हिन्दी भावार्थ

म आ पोद्दार आयुर्वेद रुग्णालय
रा आ पोद्दार आयुर्वेद रुग्णालय, महाराष्ट्रशासन
डॉ एनी बेसन्ट रोड, वरली मुम्बई - 400 018

दूरध्वनि महाविद्यालय - 4934214 (कार्यालय)
4936881 (अधिष्ठाता)
रुग्णालय 4933533 (कार्यालय)
4931846 (अधिष्ठाता)

दिनाक 15 नवबर 1995

सदर्भ - सआपो/आस्था-3 सकीर्ण/6621/1994

प्रति,
मैनेजर,
गौरक्षण सस्था, अकोला
विषय - गौमूत्रासव निरीक्षण बावत्

अकोला के गोरक्षण सस्था ने गौमूत्र की टिकाऊ औषधि भेजी। गध मुक्त, गौमूत्र की विषघ्न, मलशोधक, आसव की कल्पना मिली। अनेक प्रकार के रोगो की जैसे - दमा, मलविष्ठभ को लाभकारी है। दो-दो चम्मच आसव लेने से स्त्रोतोरोध, दमा और दूसरे रोग नष्ट होते हे। मधुमेह के रोगियो को आसव मे गुड़ होने की वजह से सावधानी वापरना है।

यह टिकाऊ कल्प अनेक रोगो पर लाभकारी हे।

अधिष्ठाता
म आ पोद्दार रुग्णालय,
वरली मुम्वई

हिन्दी भावार्थ अनुवाद

क्र रा आ पो /आस्था सकीर्ण/3095
दि 10 5 95

प्रति

आयुर्वेद सचालक

महाराष्ट्र राज्य

वरली मुम्बई - 18

विषय - गाय के मूत्र का औषधि उपयोग

सन्दर्भ - आपके कार्यालय के पत्र क्रमाक सकीर्ण/गौमूत्र 1994/आयु 2

दि 29 4 94

महोदय,

गौमूत्र का प्राणिज औषधि के स्वतत्र रुप मे उपयोग, जलोदर, प्लीहा वृद्धि गुल्म विकार, अनेक विषैली औषधियो की शुद्धि के लिए इसकी उपयोगिता भावना द्रव्यो के रुप मे होती है। धातु, उपधातुओ की भस्म तैयार करने मे गौमूत्र का उपयोग होता है। अकोला की गौरक्षण सस्था के माध्यम से गौमूत्र की वटी, आसव, अर्क प्रभावित हुए है तथा तैयार करने की पद्धति, घटक आदि की प्रक्रिया मिली। इन वस्तुओ के बिगडने का कोई भय नही। ये वस्तुए और इनका कच्चा गौमूत्र टिकाऊ पदार्थ है।

ये औषधिया श्वास, दमा, मलावरोध, अविष्ठम्भ, पक्षाघात, रती, पाण्डू, एनिमिया मे प्रयुक्त होती है। ये गौमूत्र कल्प के भी काम मे आता है। यह मूल मे निरापद औषधि है। श्री गौरक्षण सस्था अकोला के द्वारा औषधि उपलब्ध कराने पर महाराष्ट्र पोद्दार आयुर्वेद कॉलेज रुग्णालय ने इन औषधिया का प्रत्यक्ष प्रयोग किया।

इनकी क्षमता मर्यादा अनुसार उपयोगी रही।

आपका विश्वासी
अधिष्ठाता
रा आ पोद्दार वेद्यक महाविद्यालय (आयुर्वेद) वरली, मुम्बई -18

18 कैंसर के रोगियों के लिए नई आशा

संदर्भ 'कल्याण' मई 1995 (पढो–समझो–करो) शीर्षक

गाय के गौमूत्र से बहुत से जटिल रोग ठीक हो सकते है। उनमे कैसर भी गौमूत्र के सेवन से ठीक होता है। कैसरग्रस्त एक व्यक्ति का उदाहरण यहा प्रस्तुत है :-

श्री विनायक नरसिह कुलकर्णी, मु पो सारोला (काटी तालुका, बार्शी, जिला सोलापुर महाराष्ट्र) उम्र 63 वर्ष की, जीभ और टासिल का कैसर था। सोलापुर के निकट सिद्धेश्वर कैसर अस्पताल मे उन्हे डॉक्टरो ने 18 तथा 12, कुल 30 रेडिएशन के सेक लेने को कहा। अप्रैल 1992 मे उन्होने सेक लेना आरम्भ किया। 3 सेक लेते–लेते उन्हे भयकर पीडा का अनुभव हुआ। श्री कुलकर्णी ने सोचा कि सेक की पीड़ा सहन करने से तो बिना उपचार कराए मरना अच्छा है। इसके बाद अस्पताल से वे अपने गाव चले गए। जब घर पर आए उस समय उनके शरीर की स्थिति बहुत नाजुक थी, उन्हे बहुत ही कमजोरी अनुभव हो रही थी तथा चार कदम चलना भी मुश्किल था। भोजन मे तरल पदार्थ ही ले सकते थे। रोटी का छोटा सा टुकडा बहुत मुश्किल से खा पाते थे।

श्री विनायक कुलकर्णी ने एक प्राचीन पुस्तक मे गाय के मूत्र, गोबर, दही, दूध तथा घी से बने पचगव्य के बारे मे पढा। जिसके अनुसार पचगव्य नित्य लेने से शरीर की भीतरी शुद्धि हो जाती है। श्री कुलकर्णी ने पचगव्य की पाच वस्तुओ मे से केवल देशी गाय का गौमूत्र 100 ग्राम तथा एक सुपारी जितना ताजा गोबर लेकर दोनो को अच्छी तरह से मिलाकर स्वच्छ वस्त्र से छानकर पीना आरम्भ किया। उन्होने गोबर तथा गौमूत्र के घोल को सुबह मजन इत्यादि नित्यकर्म से निवृत होकर लेना प्रारम्भ किया। धीरे–धीरे श्री कुलकर्णी की कमजोरी दूर होने लगी। रोटी के टुकड़ो को जहा पहले खाने मे कठिनाई अनुभव होती थी, वही अब सरलतापूर्वक खाने लगे। धीरे–धीरे भोजन की मात्रा मे वृद्धि करते गए। निरन्तर चार महीने तक गौमूत्र तथा गोबर का सेवन करने के बाद उन्होने साधारण व्यक्ति की तरह पूरा भोजन लेना प्रारम्भ कर दिया। उनके गले की गाठे खत्म हो गई थी। स्वास्थ्य मे आश्चर्यजनक परिवर्तन आ गया। पहले जहा चार कदम चलना मुश्किल था वहा अब वे पाच किलोमीटर पैदल चलने लगे। श्री कुलकर्णी ने अपने परिचित चिकित्सक को सोलापुर मे दिखाया। चिकित्सक ने बाहरी लक्षणो के आधार पर कैसर मुक्त होने की बात बताई। मै उनसे 30 नवबर 1995 को उनके गाव पर मिलने गया था। श्री कुलकर्णी तिरेसठ साल की उम्र मे पूर्णतया स्वस्थ दिखाई दे रहे थे। गोमूत्र तथा गोबर से शरीर के सारे रोगो का इलाज **राजवैद्य रेवाशंकरजी त्रिवेदी, रटलाई (झालावाड) राज.** करते है। यह ध्यान रहे कि औषधि के लिए गौमूत्र तथा गोबर देशी गाय का ही लेना चाहिए। अच्छा चारा या घास खानेवाली स्वस्थ देशी गाय का ही गौमूत्र तथा गोबर लेना चाहिए।

– लक्ष्मीनारायणजी चांडक, मुम्बई

गौमूत्र सेवन से उच्च रक्तचाप व श्वास पर चमत्कारी लाभ

HIGH BLOOD PRESSURE AND ASTHMA

कल्याण मासिक सितम्बर 1995 के पृष्ठ 801 पर एक 79 वर्ष के दीर्घकाल से दोनो रोगो से ग्रसित रोगी का स्वय का लेख है जो - अविकल रुप से नीचे दिया जा रहा है।

मेरी अवस्था लगभग 79 वर्ष की है। मे बहुत दिनो से श्वास तथा उच्च रक्तचाप से पीड़ित था। अग्रेजी दवाइया बराबर चल रही थी।

''गौसेवा अक'' मे गौमूत्र से अनेक रोगो की चिकित्सा पढकर मैने मन बनाया कि क्यो न इसका प्रयोग किया जाए।

मुझे जुकाम भी बहुत जल्दी होता था। इसलिए मैंने फूली हुई फिटकरी आधा चम्मच, एक प्याला गोमूत्र मे पीना शुरु किया। पहले ही दिन लाभ हुआ। मुझे यह प्रयोग करते लगभग एक मास हो गया है। डॉक्टरो से चैक कराया तो पता चला कि फेफडे बिल्कुल ठीक हो गए है। रक्तचाप भी प्रायः सामान्य हो गया है।

पहले मे सौ- दो सौ कदम भी नही चल सकता था। लेकिन अब दो किलोमीटर रोज टहलता हूँ।

यदि किसी प्रकार यह प्रयोग मुझे पहले ज्ञात होता तो स्त्री का देहान्त यकृत बढने के कारण, जो 5 मास पूर्व हुआ, सभव हे वह न होता। मुझे अनेकानेक अग्रेजी दवाइयो से कुछ लाभ नहीं हुआ बल्कि गौमूत्र का थोडे समय सेवन करने से चमत्कारी लाभ हुआ।

- रामस्वरुप वर्मा

गौमूत्र पशुरोगो पर पूरी तरह से सफल है

इसके लिए असि डायरेक्टर - वेटनरी (मन्दसौर (एम पी) का परिणास पत्र सलग्र है

Dr. R.S. Shrimal

M.V. Sc. & A. H.

Assistant Director Veterinary

Ph. Off.: 694, Resi. 412 PP

Key Village Scheme, Masndsaur (M.P.)

Date - 25-11-84

श्रीमान् राजवैद्यजी,

सादर प्रणाम !

आपकी दिनाक 25 3 84 की वार्ता के अनुसार जहा तक गोमूत्र की पशु चिकित्सा मे उपयोगिता का व सफलता का सवाल है ।

मैने मदसोर क्षेत्र के सभी प्रकार के पशुओ पर आपकी गौमूत्र की बनी दवाइयो का उपयोग किया है । गौमूत्र से बनी दवाइया निम्न रोगो पर असरकारक रही हे -

1 स्कीन डिसीजेस

2 लिवर डिसीजेस

3 रुमेटिक डिसीजेस

उक्त रोगो पर गोमूत्र चिकित्सा निश्चित ही असरकारक रही है । भविष्य मे यदि इस पद्धति का विकास किया जाए तो निश्चित रुप से पशु रोगो के उपचार हेतु सस्ती भारतीय दवाइया उपलब्ध हो सकेगी ।

Dr R S Shrimal

20 गौमूत्र का पशु रोगों पर सफल परिणाम

1	माता	(Rinderpest)
2	डक हवा	(Haemorrhagic - Septicmia)
3	तड़का	(Anthrax)
4	लगड़ा	(Black Quarter)
5	खुरहा	(Foot and Mouth Diseases)
6	थनैव	(Mastitis)
7	पैट फुल्लो	(Tympanitis)
8	रुमन का भर जाना	(Impaction of Rumen)
9	अढइया	(Ephemeral Fever)
10	शुदा	(Dysentary)
11	अपच	(Indigestion)
12	दस्त	(Diarrhoae)

आदि रोगो पर गौमूत्र 250 मि ली मे 50 ग्राम गुड़ मिलाकर सुबह-शाम पिलाना चाहिए। रोग के स्थान पर गौमूत्र छिड़कना चाहिए व गोबर की राख का छिडकाव करना चाहिए।

घाव (Wound) खरोच, विद्रधि (Abscess) पर गौमूत्र लगाना, गोबर की राख छिडकना एव गौमूत्र 250 मि ली सादा या गुड मिलाकर पिलाना दो बार हितकर हे। रोगी पशु को अलग बाधना चाहिए।

साराश है कि गौवश के हर रोग मे, गौमूत्र पिलाना, लगाना चाहिए।
मात्रा अधिक भी बढा सकते है। तीन बार भी दे सकते है।
गुड की वजह से पशु गोमूत्र पी लेते है। यो बिना गुड मिलाए भी पिला सकते है।
गुड़ की उपयोगिता तो स्वाद के लिए ही है।

21 लेखक के अप्रकाशित ग्रंथो की सूची

यदि कोई संस्था या सज्जन निम्न ग्रंथो को छपवाना चाहे तो सम्पर्क करें

क्रम सख्या	नाम पुस्तक	पृष्ठ
1.	**कामधेनु चिकित्सा**	1000
	(चन्द्रोदय 6 खण्ड)	कुल
	भागों का विवरण	
	भाग-1 ''पचगव्य पचामृत''	150
	भाग-2 रोगो का सरल निदान	150
	भाग-3 सरल गौमूत्र-गोमय चिकित्सा	150
	भाग-4 शास्त्रोक्त गौमूत्र योग (खाने के)	150
	भाग-5 शास्त्रोक्त गोमूत्र योग (लगाने के)	150
	भाग-6 केसर, ब्लड कैसर, हृदय रोग, ब्लडप्रेशर, एड्स, मधुमेह, श्वास, मिर्गी, बध्या (सतान न होना), गठिया, मोटापा, बाल यकृत रोग, श्वित्र (सफेद दाग), गलित कुष्ठ, बालक का मदबुद्धि होना आदि की गौमूत्र चिकित्सा	150
2	**गौमांस भक्षण से कैंसर की उत्पत्ति** गोमूत्र से केसर की चिकित्सा	100
3	**सब सुखों की खान, गौदुग्ध पान**	20
4	**गौमूत्र चिकित्सा**	150

गौमूत्र, गोमय और गोघृत से बनने वाले कुछ योग (औषधि)

1. गौमूत्रासव

गौमूत्र 10 किलो, पुराना गुड 2 किलो को गलाकर सधान करे। बर्तन मिट्टी का अथवा काच का पात्र भी हो सकता हे। गौमूत्र को पहले उबाल ले, ताकि इसकी अमोनिया गैस निकल जाए। इससे गध नष्ट हो जाएगी। फिर छानकर ही गुड को गलाकर पुन गरम करे। एक बार पुनः गुड सहित उसको छाने। यह सधान लगभग 15 दिन तक रहना चाहिए। फिर बिना हिलाए ऊपर से, पात्र मे से यह आसव निथार लेना चाहिए ताकि इसका गाढा भाग यूरिया तलछट से नीच रह जाए और गोमूत्र आसव पारदर्शक, पतला बने। मात्रा 25 मि ली भोजन के बाद दो बार पीना चाहिए। गुण सभी गौमूत्र के समान है। इस क्रिया को, इसके गुणो को स्थाई करने और गौमूत्र को बचाए रखने के लक्ष्य से की गई है। लाभ शीघ्र होता हे।

गौमूत्र आसव का उपयोग पूरी तरह से गौमूत्र के अनुसार ही करना चाहिए। मात्रा गौमूत्र से कम हो गई हे। चिरस्थायी रहता है। पुराना होने पर अधिक से अधिक गुणकारी होता है। अतएव आसव की क्रिया वाला गोमूत्र ज्यादा गुणकारी और पूर्ण गुणयुक्त होता है।

2. गौमूत्र अर्क व गौतीर्थ

गौमूत्र को एक मिट्टी के बर्तन मे या लोहे के पात्र मे जिस पर यत्र लगा हो भरकर अग्नि पर चढाते हे। फिर इस यत्र मे एक नलिका के द्वारा जो भाप निकलती है उसको एक पात्र मे जमा करते हे जिसके नीचे ठडा पानी रखा जाता है। वहा भाप का पानी बन जाता है। उस ठडे पानी के बर्तन को सदैव सभालते रहना चाहिए, ताकि उसका पानी गरम न हो जाए। पानी को ठडा पलटते रहना चाहिए। इस यत्र मे जो नलिका लगायी जाए, वह सफेद रग की, प्लास्टिक की हो तो उत्तम है ताकि भाप दिखता रहे। यदि धुऑ जाता दिखे, तो तुरत ऑच कम करनी चाहिए। इस अर्क का गुण गोमूत्रासव के सपूर्ण गुणो के बराबार तो नही हे क्योकि क्षार पैदे मे रह जाता है और बहुत से तत्व अग्नि से सपर्क मे उड जाते है। तथापि स्वच्छ व निर्गध के कारण यह ज्यादा लोकप्रिय हे।

लाभ कुछ दिन अधिक लेते रहने से होता है। महिलाए और बच्चे को आसानी से दे सकते है। इसे देने मे शहद मिलाया जाय तो लाभ बढ जाता हे। भोजन के बाद 12 मि ली अर्क थोडा शहद मिलाकर पीना चाहिए। मुख्य रुप से खून मे बढे हुए कोलेस्ट्राल को कम करने और वजन घटाने के यह उपयोग मे आता है। बच्चो की खासी, सभी प्रकार के रोगो मे आसानी से दिया जाता है। सुकुमार महिलाओ के लिए अधिक अनुकूल है।

गौतीर्थ - लोंग, जायफल, जावित्री युक्त अर्क है। एक हजार मिली लीटर गोमूत्र मे 50 ग्राम लोंग, जायफल, जावित्री, केसर सबका चूर्ण (सब समान - प्रत्येक लगभग 16 ग्राम) मिलाकर डालकर अर्क निकालना है। (केशर डालना आवश्यक नही हे)

3. गौमूत्र घनवटी अथवा गोमूत्र वटी अथवा कामधेनु वटी

गौमूत्र को कढाई मे रखकर ओटावे। अत मे उसका गाढा भाग रह जावे, जेसा कि गन्ने के रस को औटाकर गुड बनाया जाता है। गाढा रह जाने पर उतारकर नीचे रखकर ठडा कर लेना चाहिए। एक किलो गौमूत्र से 50 ग्राम प्राप्त होता है। इसे खुरचकर आपस मे कूटकर गोलिया चने के प्रमाण की बनानी चाहिए। ये गोलिया चिपचिपी न हों इसलिये उत्तम गाय के गोबर के कण्डो को जलाकर राख बनानी चाहिए। फिर उसे बारीक कपड़े से छानकर रखनी चाहिए। इस राख का कुछ रग पलटने के लिए शुद्ध गेरू 1/100 भाग पीसकर मिलानी चाहिए। ताकि कुछ रग सुधर जाए। फिर बारीक कपडे से छानना चाहिए। इन गोलियो को इस छने हुए राख के पाउडर मे ही रखना चाहिए। यह राख का पाउडर इन गोलियो का अबझोर्वेट है जिससे मोसम की नमी या गर्मी दोनो का ही प्रभाव नहीं होता। फिर प्लास्टिक की शीशी मे बद रखना चाहिए। जितनी मात्रा पेक करनी हो, उतनी ही शीशी मे सुरक्षित रखे। जब गोलिया खाली हो जावे तो इस पावडर को फेक दे। नमी से बचाने का उपाय करना है। इसी प्रकार धूप मे यह पिघल जाती है। इसके लिए गर्मी से बचाना आवश्यक हे। छोटी हरड़े का चूर्ण चोथाई भाग मिलाकर भी गोली बनाई जा सकती हे। फिर भी गोबर की राख ही रखना ठीक है।

4.बालपाल रस

सामग्री–

गोमूत्र अर्क 500मिली लीटर

दानेदार शक्कर (चीनी) एक किलो

नींबू का सत (सायट्रिक एसिड) -5 ग्राम

खाने का (बढिया) लाल रग आधा ग्राम

निर्माण विधि–

कढाई मे चीनी व गौमूत्र अर्क को मिलाकर उबालकर, शक्कर के झाग या मेल को बाहर निकालते जावे। शर्बत की चाशनी (एक तार की) होने पर नीचे उतारकर नीबू का सत व खाने का लाल रग पहले थोड़ी सी चाशनी मे मिलाकर घोले फिर सब मे मिलाकर ठडा होने पर छानकर कपड़े से बोतलो मे भर लेवे।

सेवन विधि –

एक दिन से एक वर्ष तक बच्चो के लिए 1 छोटा चम्मच सुबह एक छोटा चम्मच शाम पानी से तथा1 वर्ष से 5 वर्ष तक के बच्चो को 2 छोटे चम्मच सुबह, 2 छोटे चम्मच शाम पानी से देना हे।

उपयोग –गुणकर्म

बालक के अपचन, अफारा, पेट के कीटाणु (कृमि), दूध फेकना, उल्टी, दूध का दूषित होने पर पाचन न होना, रोग निरोधर्नी शक्ति की कमी, ग्रोथ फेक्टर की कमी, दात निकलने के समय के कष्ट, मानसिक दुर्बलता, अविकसित मस्तिष्क, बाल रोगो से बचाव व उसकी चिकित्सा होती हे ।

लीवर, फेफड़े व दूसरे रोगो की चिकित्सा व बचाव होता है। क्योकि इसका मूल घटक, गोमूत्र अर्क ही है। गौमूत्र के सारे गुण विद्यमान हे।बच्चो की सुविधा, पसद हेतु मीठा पेय बनाया गया हे। नित्य देते रहने से बालक निरोग ओर स्वस्थ बना रहता है।

5–नारी संजीवनी

सामग्री –

गौमूत्र अर्क 500 मिलीलीटर — दानेदार शक्कर(चीनी) एक किलो

नीबू का सत(साइट्रिक एसिड) 5 ग्राम — खाने का रग(बढिया) पीला आधा ग्राम

निर्माण विधि–

कढाई मे चीनी व गोमूत्र अर्क को मिलाकर उबालकर, शक्कर के झाग या मैल को बाहर निकालते जाये। शर्बत की चाशनी जेसा होने पर नीचे उतारकर नींबू का सत व खाने का पीला रग पहले थोडी सी चाशनी मे मिलाकर घोटकर सबमे मिलाकर ठडा होने पर छानकर कपडे से बोतलो मे भर लेवे।

सेवन विधि –

इसे प्रतिदिन 3 बार लेवे, लगभग 60 मिलीलीटर रोजाना हुआ।

4 छोटे चम्मच सुबह पानी से 4 छोटे चम्मच शाम पानी से

4 छोटे चम्मच रात सोते समय पानी से

उपयोग –

महिलाओ के मसिक धर्म की किसी भी प्रकार की गड़बडी (Mensus Disorder), श्वेत प्रदर (Lecorrhea), रक्त प्रदर तथा उनके द्वारा होने वाली सब प्रकार की कमजोरी, कमर दर्द, हाथ पाव फूलना, सरदर्द, जी घबराना, चक्कर आना, दिल की कमजोरी, पेट मे गैस बनना, हथेली, पगथली जलना, दिमागी गर्मी, क्रोध आना, नीद कम आना, चेहरे पर छोटी फुसिया होना आदि रोग ठीक होते हे। हमेशा लेते रहने से महिलाओ के स्वास्थ्य एव सुन्दरता की रक्षा होती हे।

6 – प्रमेहारी

सामग्री

गौमूत्र अर्क 500 मिलीलीटर,

दानेदार शक्कर (चीनी) 1 किलोग्राम, हरा खाने का रग 1/2, नीबू का सत (साइट्रिक एसिड) 5 ग्राम।

निर्माण विधि –

(चीनी) शक्कर और गौमूत्र अर्क को कढाई मे आग पर चढा देवें। फिर शरबत की पतली चाशनी हो जाने पर, उसके झाग, मैल निकालकर चाशनी साफ कर लेवे। फिर कढाई नीचे उतारकर हरा खाने का रग व नीबू खूब का सत घोलकर पूरी चाशनी मे मिला देवे। कपडे से छानकर बोतलो मे भर देवे।

सेवन विधि मात्रा –

छोटे चार चम्मच सुबह पानी से
छोटे चार चम्मच शाम पानी से
छोटे चार चम्मच रात पानी से।

गुणधर्म –

स्वप्न दोष, धातु का पतलापन, शीघ्र पतन, शुक्र मे शुक्राणु की कमी को ठीक कर इन रोगो से होने वाली कमजोरी, सुस्ती, आलस्य, सरदर्द, याददाश्त कम होना आदि को ठीक कर नवयुवको को स्फूर्ति, बल प्रदान कर सकता है।

नोट –

नारी सजीवनी, बालपाल रस, प्रमेहारी का पूरा मुख्य घटक गौमूत्र अर्क ही है। स्वादिष्ट एव सुरुचि पूर्ण बनाना अभिप्राय है। भिन्न-भिन्न रग का मतलब है कि प्रयोगो का भिन्न-भिन्न लेबिल से पहचान मात्र हो जावे।

7 – गौमूत्र हरडे चूर्ण

सामग्री –

जौ हरड़े (छोटी हरड़े) 1 किलो
बढिया अजवाइन 2 किलो
काली मिर्च 250 ग्राम
जवा खार 60 ग्राम
बढ़िया हींग 60 ग्राम
अरण्ड तैल 100 ग्राम
गाय का घी 10 ग्राम
काला नमक 400 ग्राम
सैधा नमक 600 ग्राम

नोट –

हीग जितनी अच्छी होगी, उतना अच्छा परिणाम होगा।

निर्माण विधि –

पहले एक किलो जो हरड़े (छोटी हरड़े) को पाच दिन तक गौमूत्र मे किसी लोहे के बर्तन या स्टेनलेस स्टील के बर्तन मे भिगोवे। हर दिन गौमूत्र पलटे और नया गोमूत्र डाले।

छठे दिन अरण्ड तेल (केस्टर ऑयल) एक सौ ग्राम मे कढाई मे मन्द मन्द आच मे गोमूत्र से निकाली जौ हरडे भूने। जब सिक जावे, गौमूत्र की चिपचिपाहट मिट जावे, तब उतार लेवे वे सिकने से सूख जावेगी। गीलापन नही रहेगा। फूल जावेगी।

गाय का घी 10 ग्राम मे हीग 60 ग्राम मन्द आच पर सेक लेवे। कम से कम आच लगावे। अब सिकी हुई हरडे एक किलो, भुनी हुई हीग 60 ग्राम तथा ऊपर सामग्री मे लिखी बाकी चीजे मिलाकर बारीक चूर्ण मशीन से या हाथ से कूट पीसकर बारीक से बारीक छलनी में छाने। किसी भी कपडे से न छाने। इससे दवा का तेल नष्ट होता हे। बारीक छलनी मे छानने के बाद खरल मे थोडा थोडा लेकर खूब रगडे। बारीक से बारीक रगडने पर ही गुणकारी होगा। जितना बारीक होगा उतना ही शीघ्र लाभकारी होगा।

गुणधर्म –

पेट के सभी रोग, अम्लपित एसिडीटी (फ्त्रह्मैद्वह्रछ्न्), गैस कब्ज, कृमि, बवासीर, यकृत, आतो व पेट के छाले (स्त्रऋ्ष्ठा), घबराहट, नीद की कमी, रक्तचाप, ब्लड प्रेशर, शरीर का कोई भी वात का दर्द नष्ट होता है। अपचन, भूख की कमी नष्ट होती हे। पेट मे गडबडी होने पर सिरदर्द हो तो लाभ हो जाता है। सबको लाभ करता है। भोजन के साथ, सब्जी, दालो मे डालकर खाने या नित्य सलाद मे लेने से, खाद, पानी मे विषैली दवाईया, कीटनाशक, तत्वो का विष का प्रभाव आने को निर्विष कर, रक्त को निर्दोष बनाता है।

मात्रा –

2 छोटे चम्मच भर दिन मे दो बार या भोजन के बाद दोनो बार लेना आवश्यक है।
बिना रोग के भी नित्य सेवन करना अत्यन्त लाभप्रद है।

8 – गौतक्रासव

सामग्री –

गाय का मट्ठा 1 लीटर
(पीसा) सैधा नमक 50 ग्राम
(पीसा) राई का चूर्ण – 50 ग्राम
(पिसी) हल्दी चूर्ण – 50 ग्राम

निर्माण विधि –

गाय के मट्ठे मे बराबर का पानी मिलाकर, उसमे बाकी तीन चीजे अच्छी तरह मिलाकर रख देवे। फिर किसी मर्तबान, मिट्टी के बर्तन, या काच के मर्तबान मे भर कर मुह बद रखकर सधान करे।

चौथे दिन सारा छानकर, बोतलो मे भरे। निथार कर छानना चाहिए ताकि राई के छिलके, और हल्दी कम आ सके। बाद मे, बोतलो मे भी हल्दी जम जाने के बाद निथारते रहे।

गुणधर्म –

अर्श (बवासीर) को हर सूरत मे लाभकारी। पेट के सब रोग, भूख न लगना, अन्न न पचना, गैस अजीर्ण ठीक होते है गुणधर्म - पाचक है। यकृत प्लीहा को लाभ पहुचाता है।

सब प्रकार के बवासीर, अजीर्ण, आफरा, गैस, भूख की कँमी, घबराहट, कब्ज, सभी प्रकार के पेट रोग नाशक है। स्वादिष्ट पाचक पेय है।

मात्रा –

छोटे चार चम्मच भोजन के बाद पानी मिलाकर दो बार, पीने से फायदा होता है। सब त्रतु मे, सब के लिए बराबर मात्रा मे रोजाना लेना स्वास्थ्य रक्षक है। आयुवर्धक पेय हे। स्वादिष्ट है। निरापद, सरल योग है। गैस नाशक है।

9 – श्वित्रनाशक योग (खाना)

सामग्री –

शुद्ध बाकुची के बीज - 1 किलोग्राम — शुद्ध गेरु - 1 किलोग्राम

शुद्ध आमलासार गधक - 1 किलोग्राम — गोमूत्र क्षार 1 किलोग्राम

शुद्ध करने की विधि –

बावची - बावची के एक किलो बीजो को गौमूत्र (देशी गाय के) मे एक रातभर भीगने देवे। सुबह एक कढाई मे चढाकर दूसरा गोमूत्र मे उबाले, खूब उबलने पर कपडे से छानकर रखे।

गेरु शोधन –

गेरु मिट्टी एक किलो को 200 ग्राम गाय के घी मे मन्द-मन्द अग्नि पर भूने। उतार लेवे।

आमला सार गधक शोधन –

1 किलो आवलासार, गधक को 1 किलो गाय के घी मे कढाई मे मद आच पर पिघलावे फिर एक तपेली मे गौमूत्र भर कर उस पर साफ सूती कपडा बाधकर उस घी मे पिघले गधक (आवलासार) को तुरन्त गौमूत्र वाली तपेली मे उडेल देवे। गरम गरम ही घी सहित डालना चाहिए। फिर उस गौमूत्र मे पड़े ठडे हुए गधक का निकाल कर शुद्ध गरम पानी से धोकर रखे।

निर्माण विधि –

गौमूत्र क्षार - 1 किलो

शुद्ध आवलासार गधक - 1 किलो

शुद्ध बावची - 1 किलो

शुद्ध गेरु - 1 किलो

इन चारो वस्तुओ को कूट कूटकर खरल मे खूब घुटाई करे। जितनी घुटाई होगी उतनी ही गुणवत्ता बढेगी। फिर एक एक चने बराबर गोलिया बनाकर सुखा लेवे। नही सूखे तो गोबर के कण्डे की राख छानकर उसमे रखे। तीन दिन बाद उससे निकाल लेवे। सूख जावेगी। पानी और गर्मी से पिघलती है। सूखती नहीं है। मोसम खराब हो तो, गोबर के कण्डे की राख मे ही रखकर सुखाना चाहिए।

सुन्दर रग लाना हो तो, सूखने के बाद शुद्ध गेरु को खूब बारीक पीसकर इसमे डालकर खूब हिला लेवे। लाल रग उत्तम आ जावेगा।

उपयोग –

सुबह, दोपहर, शाम-रात को तीन तीन गोली पानी से देना है। लगभग रोग की स्थिति अनुसार 3-6-12 मास खाकर शरीर कचन काया कर सकते है। बच्चो को मात्रा आधी यानी एक एक गोली चार बार देवे।

10 – पंचगव्य घृत

घटक –

गोबर रस - 100 मि ली

गाय का दही- 100 मि ली

गौ दूध-100 मि ली

गौमूत्र-100 मि ली

गोघृत-100 मि ली

निर्माण विधि –

सबको एक कढाई मे डालकर आग पर चढावे। मद मद आच देवे। सिर्फ घी ही पकने के बाद शेष रहे। तब ठण्डा करके छान लेवे।

सेवन विधि –

10 मि ली सुबह 10 मि ली शाम को गाय के दूध या पानी से।

गुण –

मिर्गी, दिमाग की कमजोरी, पागलपन, पाण्डु, शोथ, भयकर कामला (Jaundice), ववासीर, गूल्म, ग्रह बाधा, विषमज्वर, बुद्धि मन्दता, याददाश्त की कमी पर लाभकारी है।

11 – गौमय दन्त मंजन

सामग्री –

गोबर के कण्डो को पहले साफ सुथरी जगह या कढाई मे रखकर जला देवे । आधे जल जावे तो एक साफ तगारी के ढककर उसकी आसपास की हवा बद करने के लिए टाट का कपडा किनारो पर दबा देवे । लगभग आधे घटे के बाद खोलकर काला, मजबूत पका कोयला निकाल लेवे । कच्चा, कण्डा या जली सफेद राख काम मे नही लेवे । चाहे तो जमीन मे गड्डा खोदकर ईट सीमेट से प्लास्टर कर, उसे कोयला बनाने के काम मे भी लाया जा सकता है । ऊपर किसी बडे लोह के बर्तन से ढककर हवा बन्द की जा सकती है । पर यह ज्यादा मात्रा बनाने पर ठीक रहता है । थोड़े मजन के लिए तो कढाई मे ही बना लेना चाहिए ।

इस तरह बने कोयले को खरल मे बारीक करके, सूती बारीक कपडे मे रगडकर, छानकर सूक्ष्म पाउडर बना लेव । अब सादा कपूर (पपडी का) 20 ग्राम, अजवाइन का सत 20 ग्राम ले।पहले कपूर और अजवाइन के सत को एक शीशी मे मिलाकर एक घटा रखे । जब यह अपने आप घुलकर 40 मिलि लीटर तेल बन जावेगा । कुछ कमी रहे तो खूब हिलाकर पूरा घुल जाने पर तेल बनने के बाद, बने कपूर के तेल को उपरोक्त एक किलो कण्डे के बारीक चूर्ण मे डाल देवे। फिर सादा नमक, 160 ग्राम के बारीक किये हुए पाउडर को 160 ग्राम पानी मे मिलाकर गरम करके पूरा नमक घोल लेवे । इस घुले हुवे नमक के पानी, का वजन 320 ग्राम होगा ।

अब तीनो चीजे, गोबर के कण्डे का कोयला का पाउडर एक किलो, कपूर तैल 40 मिली लीटर तथा नमक के घोल वाला पानी 320 मिली मीटर सबका वजन एक किलो तीन सौ साठ हुआ। सबको एक अच्छी साफ लोहे की कढाई या बर्तन मे मिलाकर अपने हाथो से खूब मिलाकर आधा घटा खरल मे रगडे, साफ शीशियो मे भर लेवे । इस को सूखने नही देवे । नमी की स्थिति मे भर लेवे ।

गुणधर्म –

दातो का कीड़ा लगना, दातो मे पानी लगना या गरम वस्तु लगना, मसूढे फूलना, दर्द मुह व जुबान के छाले, गले मे खराश तथा मुह के स्वाद के बिगडने पर, टासिल रोग व आवाज बेठने पर हमेशा लाभकारी, मुख दुर्गध नाशक व पायरिया, मसूडो से पीप आने पर पूर्ण लाभकारी है। सुबह व सोते समय मजन करना आवश्यक है । दन्तरक्षा व मुख रोग रक्षा होगी ।

12 – गौमय तैल

सामग्री –

गोबर का रस 100 मिली लीटर तिल्ली का तैल 100 मिली लीटर

गोबर का रस निकालने की विधि –

देशी गायो के गीले गौमय (गोबर) का एकबड़ा सा ढेर गीला इकट्ठा करे । एक सूती, खादी

का कपडा लगभग 2 फिट उस गोबर के गड्डे मे घुसेड देवे। कपडे को अन्दर फैला देवे।

6 घटे के बाद, उस कपडे को निकालकर साफ स्टील के बर्तन मे निचोड लेवे। रस कम हो तो दुबारा उसी कपडे को उसी गोबर के ढेर मे फिर फैला देवे 6 घटे के बाद फिर उसे निचोड देवे।

निर्माण विधि –

गोबर का रस, और तिल्ली का तैल दोनो को स्टील की भगौनी मे या एल्यूमिनियम की कढाई मे मिलाकर मन्द-मन्द आच पर पकावे। जब गोबर का रस जल जावे तब साफ कपडे से तेल को छाने। शीशी मे भरे।

उपयोग –

आखो की लाली, जलन, आखो के कारण सिरदर्द, तनाव, कच्चा मोतियाबिन्दु, रात्रि को कम दिखना, जाला, आखो मे खुजली होना, आखो से पानी आना आदि मे उपयोगी है। मोतिया बिन्दु कची स्थिति मे नष्ट हो जाता है। पढने लिखने, या आखो स अधिक काम करने वालो को सुबह, सोते समय, नित्य एक-एक बूद डालने से नेत्रो की ज्योति सुरक्षित रहती है। कम आयु मे लगा चश्मा और उसके नम्बर उतर जाते है।

रोजाना उपयोग करते रहने से नेत्र रक्षा होती है। आयुर्वेद के ''भैषज्य रत्नावली'' ग्रथ का नेत्ररोगाधिकार का परीक्षित योग है।

ड्रापर से एक-एक बूद आखो मे डाले।

13 – गौमय मरहम

सामग्री –

गोबर के कण्डे का बारीक रगडा हुआ चूर्ण 500 ग्राम

गेरू मिट्टी 400 ग्राम

गौमूत्र क्षार 100 ग्राम

नीला थोथा 50 ग्राम

पेट्रोलियम जेली-एक किलो

निर्माण विधि –

पहले नीला थोथा पीसकर फिर मन्द आच पर छोटी सी कढाई मे हल्का भून लेवे। रग सफेद होने पर उतार लेवे। फिर सूखी सभी चीजो को बारीक से बारीक रगड कर पेट्रोलियम जेली मे मिलाकर खरल मे खूब रगड़े। बाद मे शीशियो मे भर लेवे। कभी कोमल स्थान पर लगाने स जलन हो तो थोड़ा घी मिलाकर हल्का करे।

उपयोग –

त्वचा रोग पर गोमूत्र से वह स्थान धोकर दिन मे 2-3 बार लगावे।

लाभ –

त्वचा पर दाद, खाज, एक्जिमा, सिरोसिस, पामा, दूषित घाव पर लाभकारी।

नोट - आखो मे नही लगने पावें।

14 – कामधेनु तैल (लगाना)

सामग्री - गोबर का रस - 250 मिली लीटर गौमूत्र - 500 मिलीलीटर

कपूर (डली का) - 25 ग्राम

तिल्ली का तेल - 1000 मि ली अजवाइन का सत - 10 ग्राम

निर्माण विधि –

पहले कपूर और अजवाइन के सत को शामिल पीसकर एक शीशी मे भरे। जब तक तैल बन जावे हिलावें। फिर एक कढाही मे गौमूत्र और गोबर रस खूब मिलाकर मसलकर मजबूत कपडे से छाने। इस छने रस को तैल मे मिलाकर मन्द-मन्द आच पर कढाही मे पकावे। सिर्फ तैल रह जावे। तब ठण्डा करक छान लेवे। शीशी मे भरे, इसके बाद कपूर का तैल इसमे मिलाकर खूब हिला देवे।

उपयोग - शरीर मे किसी भी जगह दर्द हो, मालिश करके सेक देवे। आराम होगा।

15 – श्वित्र नाशक योग (लगाना)

सामग्री –

बावची के बीज - 1 किलोग्राम ग्रेरू मिट्टी - 1 किलोग्राम

हीरा कसीस - 250 ग्राम गधक सादा - 1 किलो

सभी को खूब कूट पीसकर चूर्ण तैयार कर दुगने गोमूत्र मे डालकर कढाई मे खूब पकावे पूरा गाढा हो जावे तो, हमाम दस्ते मे रगड़े और खरल मे घुटाई करे। जितनी ज्यादा घुटाई होगी उतनी दवा अच्छी बनेगी। अगर घोटने मे गौमूत्र डालते जावेगे तो गुणकारी बनेगी। चौड़ी चपटी, टिकिया बनाकर सुखावे इनका भी रग सुन्दर करना हो तो गेरु मे डालकर हिलावे। कलर हो जावेगी।

उपयोग –

दागो '' सफेद दाग'' पर पानी मे घिसकर लगावे, सुबह व सोते समय। दोपहर मे टिकिया लगाने से पहले गौमूत्र से धोवे (सिर्फ एक बार)

लगातार-कुछ महीने लगाने से दाग मिट जाते है। खाने की दवा भी खाना आवश्यक है। अगर पूरे शरीर मे दाग हो, या ज्यादा हो तो रोजाना गौमूत्र मे गोबर मिलाकर स्नान से पहले शरीर पर मालिश करके (पूरे शरीर पर) तुरन्त स्नान ठडे या गरम पानी से कर ले। ऐसा करने से

दाग शरीर मे नही फैलते है एव शरीर अतिशीघ्र कचन के समान हो जाता है।

गोबर-गोमूत्र के स्नान से चमडी की गरमी, विकार, विष खिचकर शरीर निर्विकार होने लगता है। रोग की तेजी नष्ट हो जाती है।

16 – गोपाल नस्य

सामग्री –

गोवत्स (छौ) गोबर

(गाय के तत्कार पैदा हुए बछडे-बछडी का गोबर 100 ग्राम जो बछडे के नौ मास तक गर्भ मे रहने पर दूध का गोबर त्यागा गया हो)

2 - आकडे का दूध 100 ग्राम 3- काली मिर्च 50 ग्राम

निर्माण विधि –

प्रथम बार ही गाय ने जो बछडा दिया है उस बछडे का गर्भ से निकलते ही जो मल त्याग बछडे का होता है उसे खरल मे डालकर खूब खरल करे। फिर आकडे का दूध डालकर खूब खरल करे। सूख जाने पर दूध डालते रहे। लगातार खरल करते रहे। बाद मे अच्छी तरह सुखा ले। इस सूखे हुए आकडे का दूध और बछडे के गोबर से आधा भाग काली मिर्च चूर्ण मिलाकर के फिर खूब रगडे। खरल के बाद मे कपडे से छानकर शीशी मे सुरक्षित भरकर रखे।

गुण –

मिर्गी (Epilepsy), दिमाग मे कीडे (कृमि), नाक का पीनस, हिस्टीरिया, बेहोशी, नाक का सायनस (नासा व्रण), सिर दर्द मे एक नली मे इस नस्य को रखकर दोनो सुरो मे फूके। मिर्गी के दौरे मे फूक देने से मिर्गी नष्ट होती है। ऐसा एक दो दौरे के समय नाक मे फूकने से मिर्गी के कीटाणु या विकार नष्ट हो जाते है।

17 – गौमय साबुन (स्नान के लिए)

सामग्री–

गोबर (देशी गाय का ताजा) 1250 ग्राम, गेरु मिट्टी 200 ग्राम

मुल्तानी मिट्टी 1000 ग्राम

गोवर का रस निकालकर बराबर तिल्ली के तेल को मिलाया हुआ और उससे पकाया तेल, 250 ग्राम कपूर (डली वाला) - 50 ग्राम, अजवाइन सत - 10 ग्राम

विधि – को मिलाकर गलाने पर तेल वन जाने पर रखे। गीले ताजे गोबर और गेरु, मुल्तानी मिट्टी को खूब पीसकर मिलाकर, दो दिन धूप मे सुखाए, फिर बारीक-बारीक चूर्ण करके, कपडे मे या बारीक छलनी मे छाने। बाद मे कपूर का तेल को खूब पीसकर और गौमय तेल इसी मे मिलाकर खूब मसले। फिर नीम के पत्तो का गरम उबला हुआ काढा मिलाकर छानकर मात्रा के

अनुपात मे मिला ले, फिड डाइ या साचे मे दबाकर धूप मे सुखा दे। बाद मे सोप स्टोन मे लपेटकर-पोछकर पैक कर दे।

गुण – महाभारत अनुशासन पर्व 28-19 मे आदेश दिया हे कि -

''गोयमेन, सदा, स्नायत् कर्रषि, चापि सविर्शत्''

अर्थ - मनुष्य प्रतिदिन शरीर मे गोबर लगाकर स्नान करे। स्वयमेव, सूखे गोबर पर बेठे या स्पर्श मे रहे। पुरुषोत्तम सहस्त्र नाम के स्कद 10 वा भगवान कृष्ण का नाम ही **''गोष्ठांगण गति प्रियः''** ''गौशाला के गोबर मे लीलाप्रिय कहा है। श्रीमद्भागवत के 10-6-20 मे पूतना का भगवान के द्वारा स्तनपान के बाद गोपियो ने भगवान कृष्ण को, गोमूत्र से स्नान कराया, गौरज लगाई, समस्त शरीर मे गोबर का लेप किया।

''गौमूत्रेन, स्नापयित्वा, पुनर्गोरज सार्भकम् रक्षां

चक्रुश्च, शकृता द्वादशांगेषु नामभि''

शास्त्रो मे गोबर की बड़ी महिमा है। स्नान के लिए लिखा -

''यन्मे रोगं, शोकंच – तन्मे दहतु गौमय''

अर्थ - गोबर से किया स्नान सस्कारित होता है, जिससे सर्व शारीरिक एव मानसिक व्याधियो का दहन होता है। ऋषियो ने गोमय (गोबर), मिट्टी (मृतिका) एव भस्म स्नान का विधान किया है और गोबर (गौमय) के गुणो का आयुर्वेद मे वर्णन हे कि गो का गोबर, कीटाणुनाशक, पोषक, क्रातिप्रद, दुर्गन्धनाशक, शोषक, वीर्यवर्धक, रसयुक्त परम पवित्र है।

गोबर की महिमा गान है।

'' अष्टैश्वर्य मयी लक्ष्मी, बसते गौमये सदा''

गोबर मे आठ ऐश्वर्य वाली लक्ष्मी का सतत वास है (महाभारत)। अतएव इसके नित्य स्नान से आज के प्रदूषण एव रेडियेशन तथा सक्रमण का भय नही होता है। त्वचा के रोग नाशक, रक्त की बढी हुई उष्णता को शात करने का बड़ा दिव्य गुण है। क्राति प्रदान करता है। इसलिए रोजाना स्नान करने के लिए गौमय साबुन निर्माण किया गया है। इससे सब प्रकार से लाभ ही लाभ है। बाल, खाल स्वस्थ रहती है। आयुर्वेद शास्त्र मर्यादा से इसी उद्देश्य के लिए गौमय साबुन का उपयोग करे।

18 – गौमय अंगराग (पाउडर)

सामग्री –

मुल्तानी मिट्‌टी 1000 ग्राम — गेरु मिट्‌टी 200 ग्राम

गीला गोबर 1250 ग्राम — गौमय से बनाया तेल- 250 मिलीग्राम

नीम के पत्तो का काढा कपूर (डली का) 40 ग्राम मे अजवायन सत 10 ग्राम मिलाकर गलने पर बना तेल।

निर्माण विधि – पहले साबुन की ही विधि से इसे सुखाकर बारीक पाउडर करके पेक कर लिया जाता है।

प्रयोग विधि – पानी से चेहरे, शरीर, मस्तक, सिर पर प्रयोग किया जाता है। सिर की भूसी, रुसी (Dandruff) नष्ट होता है।

गुणधर्म – गौमय साबुन की ही तरह से है। इसके चेहरे पर नित्य प्रयोग करने से चन्द्रप्रभा व काति आती है। मुह से झाई, दाग नष्ट होते हे।

19 – विश्व देव धूप (बत्तियां)

सामग्री –

गीला गौमय (गोबर) 1000 ग्राम	खस का कुटा हुआ बारीक बुरादा या आरा मशीन की लकडी का बुरादा 500 ग्राम
गाय का घी 200 ग्राम	चावल (अक्षत) 200 ग्राम

निर्माण विधि –

गोबर के अलावा सभी को गाय के घी के द्वारा मौण देवे (घी मिलाकर हाथो से मिक्स करे) फिर गोबर के साथ मिक्स करके खूब आपस मे मसले। बाद मे एक पाइप, जिस आकार की बत्ती बनाना हो उसी आकार की गोल प्लास्टिक की हो या लोहा, पीतल, एल्यूमिनियम की हो, बनाकर उसी के आकार का उसे धक्का देने वाली लकडी या लोहे की छड बनाकर तैयार करे, बाद मे उस पाइप के टुकडे मे उस माल को पानी से गीला करके ठूसकर लकडी की छड से धक्का देने से बत्तिया बन जाएगी। धूप मे थाली मे रखकर सुखा दे। फिर किसी भी टीन के डिब्बो मे पैक कर दे।

उपयोग –

''**धूपम् आघ्रापयामी**'' सभी उपासना की विधियो मे धूप प्रज्जवलन को अत्यन्त महत्व दिया हे। हवा शुद्धि, वायु प्रदूषण की रोक, पर्यावरण सतुलन, दीर्घ श्वसन, स्वस्थ्यरक्षण, रोगाणुनाशक एव मन शाति से पूरा सबध है। यह धूप शास्त्रोक्त, शुद्ध वनस्पतिजन्य द्रव्यो का होना आवश्यक हे। कैमिकल न होना चाहिए। धूप विधान इस प्रकार है –

वनस्पति रसोद भूतो – गधाडन्यो, गध, उत्तमा आधेय, सर्व देवोनाम् धुपोयम् प्रति गृह्यताम्। इसी विधान से गौमय (गोबर) समिधा काष्ठ शुद्ध वनस्पति जन्य धूप गोघृत आदि युक्त धूप निर्माण है।

20 – गौदेव धूप (वातावरण शुद्धि) हेतु

सामाग्री –

1. लाल चन्दन 250 ग्राम
2 जटामासी 250 ग्राम
3 नागर मोथा 250 ग्राम
4 सूखा गोबर चूर्ण 750 ग्राम

विधि –

सबको खूब बारीक पीसकर पाउडर बना ले।

पयोग –

गाय के गोबर के कण्डे की आग या कोयलो की आग पर धूपन करने से जीवाणु-कीटाणु मच्छर आदि से मुक्ति मिलती है। इस वातावरण मे श्वास लेने से रोग नाश होकर प्राणवायु मिलती है। दीर्घायु एव मानसिक शाति मिलती है। रात को पलग के पास धूप देकर सोने से नींद गहरी आती है।

21 – एक्जिमा साबुन

सामगी –

मुल्तानी मिट्टी 1 किलो
लाल गेरु मिट्टी 200 ग्राम
गीला गोबर 1250 ग्राम
नीला थोथा (Copper Sulphate) 36 ग्राम

निर्माण विधि –

कापर सल्फेट ''नीला थोथा'' को बारीक से बारीक पीसकर उपरोक्त सामान मे मिलाकर नीम के पत्तो का काढा बनाकर छानकर उस पानी से गीला करके टिकिया सा बनाकर डाइ या वैसे ही टिकिया बनाकर धूप मे सुखा लेवे।

उपयोग –

टिकिया को एक्जिमा (पामा), दाद, सिरोसिस ऑफ स्किन (मण्डल कुष्ठ) मे पानी मे घिसकर लगाना है। यदि जलन लगे तो घी, खोपरे का तेल लगा ले।

सावधानी –

1 इस टिकिया को चेहरे और आखो पर नही लगाना चाहिए।

2 यह स्नान के लिए नही है।

3 जिस जगह एक्जिमा हो वही लगाना है। शरीर के दूसरे हिस्सो पर नही लगाए।

22 – कामधेनू खाद (सूखा)

गोबर को नेडप कम्पोस्ट विधि से वनस्पति के फालतू पत्ते, शाखाए, जल डालकर सडाने से उत्तम सेन्द्रिय खाद तेयार हो जाती हे। छोटे से गड्ढे मे भी घर मे तेयार हो सकता हे। जिनके घर एक भी गाय है वहा उत्तम खाद तैयार हो जाती हे।

उसके पेकेट के रुप मे जल मे घोलकर घर के गमलो, तुलसी दल, फूलो व गमलो मे व्यवहार करके अपने घरो मे वातावरण शुद्धि करके प्रदूषण मुक्ति मे सहायक हो सकती है। तुलसी दल व घर के फूलो के गमलो के लिए उत्तम खाद है। राजस्थान गोसेवा सघ, दुर्गापुरा से यह हर समय उपलब्ध है। प्रशिक्षण की व्यवस्था भी हैं।

23 – स्प्रे के लिए कामधेनु खाद (तरल)

वृद्ध गाय, बैल तथा साड के मूत्र मे नाइट्रोजन की मात्रा अधिक होती है। 10 किलो गौमूत्र मे 2 5 किलो नीम की पत्ती को पन्द्रह दिन सडाकर उसे छानकर कीटनाशक औषधि बनती हे। 1 किलो कीटनाशक औषधि को 100 किलो जल मे मिलाकर पौधो पर छिडका जाता है। इस छिडकाव से रासायनिक छिडकाव के जहर से बच सकते है और बहुत कम खर्च मे आपके पौधो पर छिडकाव हो कीटरक्षा जाती है।

24 – कामधेनु शैम्पू (केश निखार)

सामग्री –

गौमूत्र 2 किलो, अरीठा 50 ग्राम, कपूर डली का 15 ग्राम, अजवाइन का सत 10 ग्राम

विधि –

अरीठा बारीक कूटकर गौमूत्र मे औटाए। 500 ग्राम शेष बचने पर छानले। कपूर व अजवाइन का सत को एक अलग शीशी मे थोडी देर रखकर हिलाएँ। फिर शेष छने गौमूत्र मे मिला दे।

उपयोग –

सिर मे स्नान के समय बालो पर अच्छी तरह लगाए।

25 – गौमूत्र इल्ली नाशक स्प्रे

फसलो की इल्ली (अल्ली) लम्बा कीड़ा मारने के लिए।

विधि –

गोमूत्र मे निर्गुड़ी (नेगड) (सभालु) के पत्ते, मजरी, डठल 100 ग्राम को सडाकर बीस दिन रखे। फिर मसलकर छानकर स्प्रे (छिडकाव) करने से, फसलो का इल्ली का रोग नष्ट हो जाता ह। पहले ही छिडकाव किया जाए तो इल्ली का प्रकोप होगा ही नही।

औषधि के नाम, गुण व मात्रा

10 पचगव्य घृत
मिर्गी (Epilepsy), हिस्टीरिया, उन्माद, तनाव, बुद्धि की कमी, पागलपन मे सफल।
सुवह 2 छोटे चम्मच गोदूध से सोते समय 2 छोचे चम्मच गोदूध से

11 श्वित्रनाशक टिकिया (खाना)
सफेद दागो (Lecoderma) पर सफल।
सुवह 2 गोली शाम 2 गोली पानी से।

12 गोमय-तेल
कच्चा मोतियाविन्द (Cataract) लाली, जलन, फूला, रतौधी पर उपयोगी।
2-2 वूद सुवह-सोते समय आखो में डालना है।

13 गोमय मरहम
त्वचा रोग, एक्जिमा पर लाभदायक 2 वार लगाना है।
पहले गोमूत्र से धोवे या एक्जिमा साबुन लगा लेवे।

14 श्वित्रनाशक टिकिया (लगाना)
पानी मे घिसकर Lecoderma के सफेद दागो पर लगाना है।

15 गोमय दन्त मजन
मुख के छाले, टासिल, मसूडे व दात रोगो पर लाभकारी
सुवह व रात को सोते समय मजन करना

16 गोपाल नस्य (सुघने के लिये)
नाक का विगडा जुकाम, सायनस, पीनस, मिर्गी पर रोजाना दो चावल भर सुवह, सोते समय सूघना है।

17 गोमय साबुन
त्वचा रोग, खर्पर कुष्ठ (चमडी का साइरोसिस) विषाक्त वातावरण व सक्रमण से रक्षा करता है।
नित्य स्नान करना है।

18 गोमय अंगराग पाउडर
चेहरे पर मुहासे, फुसिया, त्वचा की गर्मी के रोगो पर पानी मे घोलकर, सोते समय लगाना।

19 कामधेनू शेम्पू
सिर के वाल व खाल (त्वचा) के लिए स्वास्थ्यप्रद, स्नान के समय लगाना है।

20 कामधेनू तेल
शरीर के किसी भी अग के दर्द पर लगाना

21 एक्जीमा साबुन
पामा (Eczema) पर पानी मे घिस कर लगाना।

22 कामधेनू खाद (सुखा)
वागवानी, तुलसी व गमलो मे डालने हेतु वैज्ञानिक विधि से तैयार प्राकृतिक खाद।

23 कामधेनु खाद (तरल)
फसलो पर स्प्रे (छिडकने हेतु)

24 इल्लीनाशक स्प्रे खाद
स्पेशल रुप से इल्ली रोग जो फसलो मे होता है उस पर स्प्रे के लिए।

25 विश्वदेव धूपवत्ती
देव पूजा व वातावरण शुद्धि के लिए

26 गोदेव धूप
वातावरण शुद्धि, प्रदूषण शुद्धि क लिए अगारों पर जलाने के लिए।